

तुम्हारे पंजे देखकर
डरते हैं बुरे आदमी
तुम्हारा सौष्ठव देखकर
खुश होते हैं अच्छे आदमी
यही मैं चाहूँगा सुनना
अपनी कविता के बारे में।

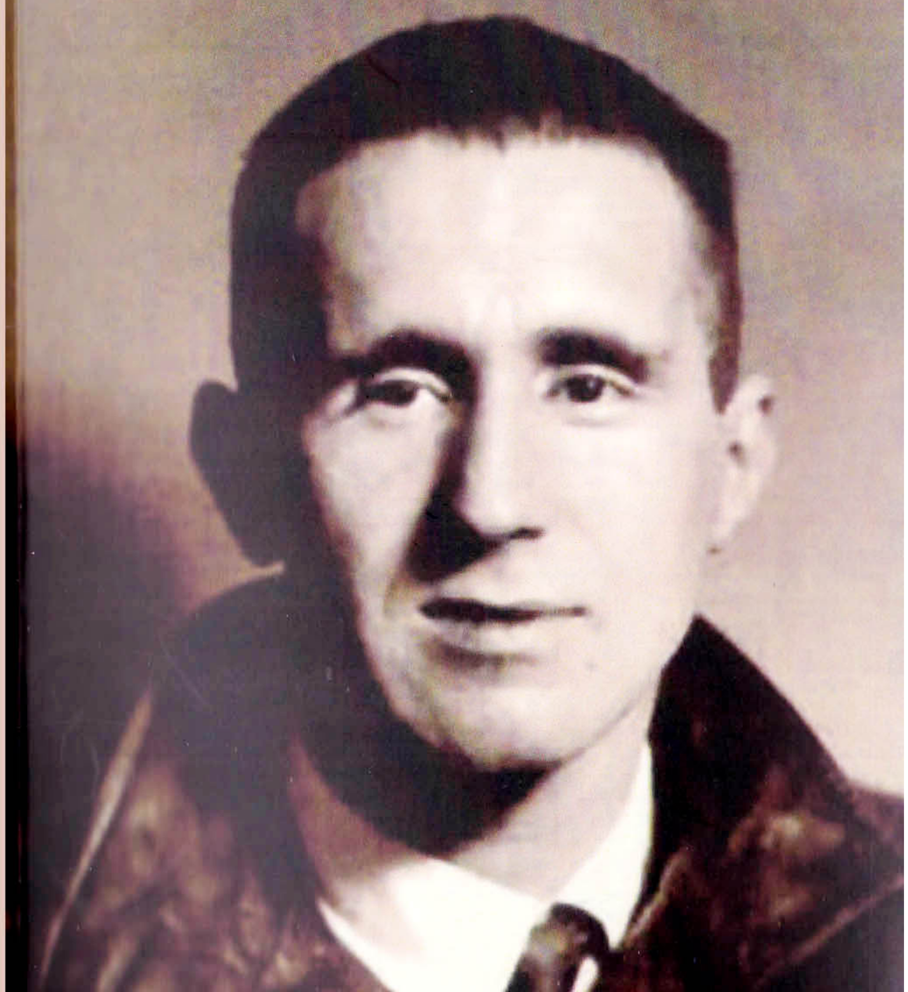
— ब्रेख्त

('एक चीनी शेर की नक्काशी को देखकर' कविता से)

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ

मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

जन्म : 10 फ़रवरी 1898, ऑग्सबुर्ग (जर्मनी)
निधन : 14 अगस्त 1956, बर्लिन

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट (असली नाम आयगन बर्थोल्ड फ़्रीडरिख़ ब्रेष्ट) के लिए कविता करना और नाटक लिखना दो अलग चीज़ें नहीं रहीं। अपनी कविताओं के बारे में ब्रेष्ट का कहना था कि उन्होंने अक्सर नाटक के लिए काम किया है, इसलिए हमेशा ही बोलचाल की भाषा में सोचा है। बोलचाल की इस भाषा को कविता में एक ख़ास ढंग से रखने की तकनीक को वह 'भंगिमा' कहते थे। प्रतीकवाद और रूमानियत को ख़त्म करने में ब्रेष्ट का ज़बरदस्त हाथ रहा और साथ ही साथ जर्मन साहित्य की कुछ पुरानी परम्पराओं का सहारा लेते हुए उन्होंने छन्द, कथाशैली, लोकगीत और मुहावरों का इस्तेमाल अपनी कविता में उतने ही सशक्त ढंग से किया, जितना कि पुराने कवियों में हाइनरिख़ हाइने ने। ब्रेष्ट की कविताओं में तीखी लेकिन सीधी-सादी भाषा मिलती है। आयरनी (irony) का प्रवाह शैली को बाँधते हुए चलता है। एक ही कविता में कई उतार-चढ़ाव, असम्बद्धता या तेल और तेज़ाब की गन्ध एक साथ देखने को मिल जाती है।

मोहन थपलियाल (भूमिका से)

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट : इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट : इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ

सम्पादन व मूल जर्मन से अनुवाद

मोहन थपलियाल

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN 978-81-89760-53-3

पहला संस्करण : 10 फ़रवरी 1998
(ब्रेष्ट जन्मशताब्दी के अवसर पर)
दूसरा संशोधित संस्करण : नवम्बर, 1998
तीसरा संशोधित संस्करण : दिसम्बर 2017

परिकल्पना प्रकाशन
(राहुल फाउण्डेशन का एक इम्प्रिंट)
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड
निशातगंज, लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण : **रामबाबू**

मुख्य वितरक : **जनचेतना**, डी-68, निरालानगर, लखनऊ 226020
फ़ोन : 0522-4108495 ईमेल : info@janchetnabooks.org
वेबसाइट : janchetnabooks.org

Bertolt Brecht : Ekhattar Kavitayen aur Tees Chhoti Kahaniyan
Edited and translated from German by **Mohan Thapliyal**

ब्रेष्ट के उन तमाम
पाठकों व प्रशंसकों के लिए,
जो यह मानते हैं कि :
'उसने सुझाव दिये और
हमने उन पर अमल किया।'



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट
(10 फ़रवरी 1898 - 14 अगस्त 1956)

प्रकाशक की ओर से

क्या अँधेरे वक़्त में भी
गीत गाये जायेंगे?
हाँ, अँधेरे के बारे में भी
गीत गाये जायेंगे।
(बेर्टोल्ट ब्रेष्ट)

एक कठिन समय में ब्रेष्ट का जन्मशताब्दी वर्ष आया है। एक अँधेरे समय की चुनौतियों और दायित्वों के रूबरू खड़े होकर हम ब्रेष्ट को याद कर रहे हैं।

वह महान जर्मन चिन्तक कवि-नाटककार जीवनपर्यन्त अँधेरे की ताक़तों का कोप झेलता रहा और उनसे जूझता रहा। इस प्रक्रिया में उसने जीवन और कविता की शक्ति की पहचान की और उनकी अजेयता में दृढ़ निष्ठा अर्जित की। ब्रेष्ट ने अपनी रचनाओं के ज़रिये न केवल मानवद्रोही-मानवद्वेषी शक्तियों पर हमला बोला बल्कि उनकी शक्ति के स्रोतों की भी शिनाख़्त की। उसने पूँजीवाद की मानवद्रोही-कलाद्रोही अन्तर्वस्तु को तार-तार करते हुए जिजीविषा और युयुत्सा के गीत गाये। फासीवाद के क़हर और युद्ध के विनाश का साक्षी और भोक्ता होने के नाते ब्रेष्ट ने अपने समकालीनों और आने वाली पीढ़ियों को सिखाया कि फासीवाद से रोम-रोम से नफ़रत की जानी चाहिए और इसके विरुद्ध अन्तिम फ़ैसले तक लड़ाई लड़ी जानी चाहिए।

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट सर्वहारा कला-साहित्य का अप्रतिम सिद्धान्तकार था। उसके इस पहलू पर अलग से विस्तृत चर्चा आज के समय की ज़रूरत है। ख़ासतौर पर ब्रेष्टियन नाट्यशास्त्र को आज नये सिरे से जानने-समझने की ज़रूरत है। समाजवादी यथार्थवाद के अग्रदूतों की क़तार में ब्रेष्ट का स्थान गोर्की, आइज़ेंस्ताइन, स्तानिस्लाव्स्की, हावर्ड फ़ास्ट, राल्फ़ फ़ॉक्स आदि के बीच है। हाइने, वेयेर्त और फ्रैलिगराथ जैसे पहली पीढ़ी के सर्वहारा कवियों की सर्जनात्मकता को ब्रेष्ट के कवि कर्म ने आगे विस्तार दिया। नाटककार के रूप में ब्रेष्ट ने शेक्सपियर-मौलियर-इब्सन आदि की यूरोपीय क्रान्तिकारी बुर्जुआ यथार्थवाद की धारा को आगे सर्वहारा यथार्थवाद के सीमान्तों के भीतर अद्वितीय

विस्तार दिया।

अब तक भारत में, विशेषकर हिन्दी में, ब्रेष्ट के विस्तृत रचना संसार का बहुत थोड़ा अंश ही प्रकाशित हो पाया है।

जन्मशताब्दी वर्ष के दौरान ब्रेष्ट की कविताओं, प्रमुख नाटकों और महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक लेखन के चुनींदा संकलन प्रकाशित करने की हमारी योजना है। इस श्रृंखला में सर्वप्रथम ब्रेष्ट की 101 रचनाओं का यह संकलन प्रस्तुत है। इनका अनुवाद सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक मोहन थपलियाल ने मूल जर्मन से किया है। मोहन थपलियाल ने न केवल जर्मन भाषा और साहित्य का गहराई से अध्ययन किया है बल्कि ब्रेष्ट के विचारों के साथ घनिष्ठता और उनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि से भली-भाँति परिचित होने के कारण ब्रेष्ट साहित्य के श्रेष्ठ अनुवादकों में उनकी गणना होती है। खराब स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने बड़ी लगन के साथ यह संकलन तैयार किया है। इस पुस्तक के स्वरूप को निखारने वाले ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्र व व्यंग्य-चित्र उन्हीं के सौजन्य से हमें प्राप्त हुए हैं।

हमें विश्वास है कि जन्मशताब्दी वर्ष के दौरान ब्रेष्ट के प्रशंसकों को यह प्रस्तुति पसन्द आयेगी; और ब्रेष्ट के नये प्रशंसक बनाने में भी यह सफल रहेगी।

पाठकों के सुझावों और प्रतिक्रियाओं की हम बेकली से प्रतीक्षा करेंगे।

– परिकल्पना प्रकाशन

दूसरी बार छपने पर

पहली बार यह संग्रह हमने बर्तोल्त ब्रेख्त नाम देकर छापा था। इस बार बेर्टोल्ट ब्रेष्ट नाम दिया है। दरअसल हिन्दी के अनुवादों में ब्रेष्ट का नाम ब्रेख्त, ब्रेश्ट अथवा ब्रेष्ट के रूप में चलता रहा है। ऐसा शायद इसलिए भी हुआ है कि ch अक्षरों का उच्चारण भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार जर्मनी में अलग-अलग है। किसी क्षेत्र में इन अक्षरों को 'श' या 'ष' के रूप में उच्चारित किया जाता है और कहीं 'ख' के रूप में। इसीलिए जर्मन में ich (हिन्दी में 'मैं') का उच्चारण कहीं 'इश' या 'इष' और कहीं 'इख' के रूप में किया जाता है। यह कुछ-कुछ उसी तरह है जैसे हमारे यहाँ ऋषिकेश को कुछ लोग ऋखिकेश भी उच्चारित करते हैं। यह स्पष्ट करना भी ज़रूरी है कि जर्मन अक्षर C का उच्चारण अंग्रेज़ी अक्षर C की तरह नहीं है। जर्मन C का उच्चारण 'त्से' के करीब है, जबकि अंग्रेज़ी में इसका उच्चारण 'स', 'क' या 'च' भी है। मोटे तौर पर जर्मन T और अंग्रेज़ी T में यद्यपि ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है, फिर भी जर्मन लोगों का T अक्षर का उच्चारण ठीक उसी तरह नहीं है जैसा कि अंग्रेज़ी भाषियों का है। यह फ़र्क़ जब कोई जर्मनभाषी अंग्रेज़ी बोल रहा हो, तब महसूस किया जा सकता है। मेरे विचार से जर्मन T अंग्रेज़ी की अपेक्षा थोड़ा कोमल है। लेकिन यह समस्या जर्मन अक्षर R के साथ भी है, जिसका ठीक-ठीक उच्चारण कर पाना हिन्दी भाषियों के लिए काफ़ी कठिन है क्योंकि जर्मन R सीधे गले के अन्दर से उच्चारित होता है। बहरहाल कुछ जर्मन अक्षरों के बहुत सही उच्चारण न मिलने पर जिस तरह कुछ जर्मन-अंग्रेज़ी शब्दकोश – unknown in english लिख देते हैं, उसी तरह हिन्दी में भी सही उच्चारण न मिलने पर इसी तरह कुछ कहा जा सकता है। फ़िलहाल T को हम कठोर 'ट' के रूप में ही ले रहे हैं और ch को 'ष' के रूप में। बर्टोल्ट की जगह बेर्टोल्ट हम इसलिए ले रहे हैं क्योंकि जर्मन B अक्षर का उच्चारण 'बे' है न कि अंग्रेज़ी की तरह 'बी'।

इस बार रचनाओं के शीर्षक मूल जर्मन में भी दे दिये हैं, ताकि शोधार्थियों अथवा ऐसे जर्मनभाषियों को, जो हिन्दी जानते हैं, कुछ सहूलियत मिल सके।

इस संग्रह के ज़्यादातर अनुवाद 'हिरावल', 'आलोचना' और 'पहल' में छपे थे, अतः इन पत्रिकाओं के सम्पादक – शिवमंगल सिद्धान्तकर, डॉ. नामवर

सिंह व परमानन्द श्रीवास्तव तथा भाई ज्ञानरंजन कहीं-न-कहीं मेरे लिए बतौर प्रेरक रहे हैं। अपने एक और सहृदय साथी प्रशान्त कुमार का ज़िक्र भी करना चाहूँगा, जिसके बार-बार दबाव डालने पर ही मैं इन अनुवादों को एकत्र कर पाण्डुलिपि की शक्ल दे पाया था, अन्यथा ये आज भी मेरे कागज़ों में इधर-उधर बिखरे पड़े होते। इस लिहाज़ से मैं प्रशान्त की पीठ ठोकूँ या वह मेरी, कुछ समझ में नहीं आ रहा। बहरहाल इस काम में बहुत सारी त्रुटियाँ जो भी रह गयी हों, उन सबकी ज़िम्मेदारी मैं ही लेता हूँ।

- मोहन थपलियाल

21 अक्टूबर 1998

एच-2/641, जानकीपुरम
कुर्सी रोड, लखनऊ-226021

क्रम

कौयनर महाशय की कहानियाँ
[Geschichten vom Herrn Keuner]

महाशय 'ब' की कहानियाँ
[Geschichten vom Herrn B.]

भूमिका



दुख के कारणों की तलाश का कवि

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट (असली नाम आयगन बर्थोल्ड फ्रीडरिख ब्रेष्ट) के लिए कविता करना और नाटक लिखना दो अलग चीज़ें नहीं रहीं। अपनी कविताओं के बारे में ब्रेष्ट का कहना था कि उन्होंने अक़सर नाटक के लिए काम किया है, इसलिए हमेशा ही बोलचाल की भाषा में सोचा है। बोलचाल की इस भाषा को कविता में एक ख़ास ढंग से रखने की तकनीक को वह 'भंगिमा' कहते थे। प्रतीकवाद और रूमानियत को ख़त्म करने में ब्रेष्ट का ज़बरदस्त हाथ रहा और साथ ही साथ जर्मन साहित्य की कुछ पुरानी परम्पराओं का सहारा लेते हुए उन्होंने छन्द, कथाशैली, लोकगीत और मुहावरों का इस्तेमाल अपनी कविता में उतने ही सशक्त ढंग से किया, जितना कि पुराने कवियों में हाइनरिख हाइने ने। ब्रेष्ट की कविताओं में तीखी लेकिन सीधी-सादी भाषा मिलती है। आयरनी (irony) का प्रवाह शैली को बाँधते हुए चलता है। एक ही कविता में कई उतार-चढ़ाव, असम्बद्धता या तेल और तेज़ाब की गन्ध एक साथ देखने को मिल जाती है।

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट का जन्म 10 फ़रवरी 1898 को जर्मनी के बावेरिया प्रान्त के ऑग्सबुर्ग क़स्बे में हुआ था। ऑग्सबुर्ग में इनके पिता एक पेपरमिल में प्रबन्ध निदेशक थे। माता-पिता का सम्बन्ध किसान परिवारों से था। इनके पिता एक रोमन कैथोलिक और माता

लूथर मत की अनुयायी थी। बचपन में ब्रेष्ट का लालन-पालन लूथर पद्धति से ही हुआ। प्राथमिक व सेकेण्डरी स्कूल तक की शिक्षा ऑग्सबुर्ग में पूरी करने के बाद 1917 के पतझड़ में ब्रेष्ट ने म्यूनिख यूनिवर्सिटी में मेडिकल साइंस की पढ़ाई में दाख़िला लिया। मगर डाक्टरी पढ़ने के दौरान इनका रुझान ज़्यादातर कविता और नाट्यलेखन की ओर ही बना रहा। उनकी कुछ प्रारम्भिक कविताएँ ऑग्सबुर्ग के एक अख़बार में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थीं। प्रथम विश्वयुद्ध के अन्तिम वर्ष में ब्रेष्ट को फ़ौज से भर्ती होने का बुलावा आ गया। क्योंकि वह मेडिकल की पढ़ाई कर रहे थे, इसलिए उन्हें अग्रिम मोर्चे पर न भेजकर सेना के चिकित्सा कोर में भर्ती कर दिया गया। पिता की सिफ़ारिश के चलते उनकी नियुक्ति ऑग्सबुर्ग के सैनिक अस्पताल में ही कर दी गयी। अस्पताल में उनकी ड्यूटी यौन रोग विभाग में लगा दी गयी थी। सेना की नौकरी ने उनके जीवन पर जो प्रभाव छोड़ा, उसकी वजह से वह ज़िन्दगी-भर युद्धविरोधी या शान्तिप्रिय बने रहे। इस शान्तिकामी दर्शन का असर बाद में उनके राजनीतिक दृष्टिकोण पर भी पड़ा।

शुरू के वर्षों में ब्रेष्ट के कुछ ख़ास दोस्तों में सर्वाधिक जिगरी दोस्त पेण्टर व डिजायनर कैस्पर नेहर थे, जो अन्तिम समय तक ब्रेष्ट के घनिष्ठ सहयोगी बने रहे। ब्रेष्ट अपनी गाथा-कविताओं (Ballads) को खुद लिखते थे, खुद उनका संगीत तैयार करते थे और फिर इन गीतों को अपनी मित्र मण्डली के बीच खुद ही गाकर सुनाया करते थे। साहित्यिक जीवन के शुरुआती दौर में लिखे गये नाटकों को भी वह दोस्तों के बीच पढ़कर सुनाया करते थे। अपना पहला नाटक 'बाल' (Ball) उन्होंने 1918 में लिखा। इस नाटक में एक युवा कवि की ऐसी उदात्त भावनाओं को नाट्यकथा का आधार बनाया गया है, जो जीवन के नशे में चूर होकर इतना अधिक उन्मत्त हो गया है कि तमाम सामाजिक रस्मों को तिलांजलि देकर वह आवारा और हत्यारा बन जाता है।

कैसर की जर्मनी का पतन होने के बाद ब्रेष्ट पुनः म्यूनिख चले आये। यूनिवर्सिटी की पढ़ाई पर इस बार भी उनका ध्यान कम रहा और नाटकों के लेखन-मंचन की ओर ही उनकी दिलचस्पी ज़्यादा बनी रही। कुछ समय तक वह ऑग्सबुर्ग से प्रकाशित होने वाले एक वामपन्थी अख़बार - 'देर फॉक्सविले' (Der Volkswille) के नाट्य समीक्षक भी रहे। 1919 में ब्रेष्ट ने अपना दूसरा नाटक 'ट्रामेल्न्न इन देर नाख़्त' (ड्रम्स इन द नाइट) मंचन के लिए लियोन फायख़्तवेंगर के सुपुर्द किया। फायख़्तवेंगर उन दिनों म्यूनिख स्थित 'कामरस्पीले थियेटर' के साहित्यिक सलाहकारों में से एक थे। बाद में उन्होंने उपन्यास लेखन में भी काफ़ी नाम कमाया। ब्रेष्ट के साथ फायख़्तवेंगर की दोस्ती भी आजीवन

चली। फायख़्तवेंगर ने - 'ड्रम्स इन द नाइट' को उच्चस्तरीय नाटक करार देकर उसकी ख़ूब प्रशंसा की। 29 सितम्बर 1922 को इस नाटक का पहला मंचन हुआ और इसी के साथ एक सफल एवं सक्षम नाटककार के रूप में ब्रेष्ट को मान्यता मिलने में ज़्यादा देर नहीं लगी। मेधावी युवा प्रतिभा को दिया जाने वाला उस वर्ष का 'क्लाइस्ट पुरस्कार' भी इस नाट्य रचना पर ब्रेष्ट को दिया गया। नाटककार के रूप में मिली इस पहली सफलता के उल्लास में ब्रेष्ट ने उसी वर्ष नवम्बर माह में युवा अभिनेत्री मारियाने शोल्फ से शादी कर ली। ब्रेष्ट के नाटक 'ड्रम्स इन द नाइट' की कहानी में मार्क्सवाद का प्रभाव नहीं है। इसकी कहानी संक्षेप में इस प्रकार है : प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान युद्ध के मोर्चे से घर लौटने पर एक सिपाही देखता है कि उसकी प्रेमिका को किसी अन्य व्यक्ति ने गर्भवती बना डाला है। ऐसी स्थिति में वह सिपाही बजाय इसके कि प्रेमिका के करतब से खिन्न होकर जनवरी 1919 में स्पार्टाकिस्ट्स के कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी विद्रोह में हिस्सा लेता, वह उसी प्रेमिका के साथ सुविधाभोगी जीवन बिताने पर राजी हो जाता है। इस नाटक के बाद ब्रेष्ट ने 'इन द जंगल ऑफ़ सिटीज़' लिखा, जिसमें कि उनका दिशाहीन नज़रिया जारी रहा। इस नाटक का पहला प्रदर्शन मार्च 1923 में म्यूनिख में हुआ था।

1924 में ब्रेष्ट बर्लिन चले आये, जो कि उस वक़्त जर्मनी की राजनीतिक और रंगमंचीय दोनों गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था। बर्लिन में ब्रेष्ट ने मैक्स राइनहार्ट्स के 'डॉयचे थियेटर' (जर्मन थियेटर) में कुछ समय तक नाटक लेखक एवं सम्पादन सहयोगी के रूप में काम किया। बर्लिन में वह वामपन्थी कलाकार और बुद्धिजीवियों के बीच में ख़ासकर लोकप्रिय होते गये और कुछ ही समय में इस गोल के केन्द्रबिन्दु के रूप में स्थापित हो गये। 1928 में उन्होंने अपनी पहली पत्नी मारियाने शोल्फ से तलाक़ लेकर अभिनेत्री हेलने वाइगल से शादी कर ली।

ब्रेष्ट की कला की मुख्य प्रवृत्ति पूँजीवादी नज़रिये पर तीखा प्रहार करना रहा। दरअसल प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर जर्मनी की जनता बुरी तरह अपमानित और सन्त्रस्त हो चुकी थी। उस समय ब्रेष्ट के कुछ साहित्यिक मित्र ऐसे भी थे, जिनका सम्बन्ध कला एवं साहित्य के 'दादा मूवमेण्ट' से रहा था। स्थापित व्यवस्था के ख़िलाफ़ एक नकारवादी आन्दोलन के रूप में 'दादा मूवमेण्ट' की शुरुआत 1916 के आसपास ज्यूरिख़ (स्विट्ज़रलैण्ड) में हुई थी और 1920 के मध्य तक इस आन्दोलन की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र पेरिस हो गया था। 'दादा मूवमेण्ट' के समर्थक पूँजीवादी कला मूल्यों को नेस्तनाबूद करने का बीड़ा उठाये हुए थे। पूँजीवादी मूल्यों पर तीखे प्रहार का उदाहरण ब्रेष्ट

की उस दौर की लिखी 'हाउस पाउस टीले' (घरेलू स्त्रोत संग्रह) शीर्षक कविताओं में मिलता है। इन कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद एरिक बेण्टले ने 1927 में 'मैनुअल ऑफ़ पायटी' नाम देकर छापा था। इन कविताओं में एक युवा व्यक्ति की ऐसी भावनाएँ हैं, जो बार-बार यह महसूस करता है कि उस पर चारों तरफ़ से कुदरत, युद्ध, यौनाकांक्षा और मौत ने हमला बोल दिया है और इस हमले से वह खुद को बेहद डरा-डरा पाता है। इसके बाद ब्रेष्ट ज्यों-ज्यों इतिहास की सुसंगत एवं वैज्ञानिक विवेचना वाले मार्क्सवादी विचारों के प्रभाव में आये, त्यों-त्यों इस अराजक नकारवाद का असर उनकी रचनाओं से अदृश्य होने लगा। आगे चलकर ब्रेष्ट ने मार्क्सवादी विचारधारा को ही वह एकमात्र उपाय माना, जिसके ज़रिये आदमी के दुखों का अन्त हो सकता है। बीसवीं सदी के तीसरे दशक के अन्तिम वर्षों में जिस व्यक्ति ने ब्रेष्ट को मार्क्सवादी विचारधारा से परिचित कराया था, उसका नाम कार्ल कोर्श (Karl Korsch) था, जो एक प्रखर मार्क्सवादी चिन्तक होने के साथ-साथ राइखस्टाग (जर्मन संसद) में कम्युनिस्ट सदस्य भी रह चुका था।

प्रयोगधर्मी नाटक 'बाल' के दौर में ब्रेष्ट अत्यधिक मस्तमौलेपन के शिकार रहे। इसके बाद कुछ समय तक उन पर फ़्रांसीसी प्रतीकवादी कवि पॉल वरलीन, आर्थर रिम्बाउ, अंग्रेज़ी उपन्यासकार रुडयार्ड किपलिंग, जर्मन नाटककार ग्यार्ग (ज्यार्ज) बूखनेर और फ्रैंक वेडेकिण्ड का काफ़ी प्रभाव रहा। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर लिखी गयी उनकी पहली रचना 'मन इस्ट मन' (A man is a man) है। यह नाटक पहली बार ड्रामस्टट में सितम्बर 1926 को मंचित किया गया था। लगभग दो वर्ष बाद बर्लिन के 'सिफबाउरदम' थियेटर में उनके नाटक 'ड्राइ ग्रोशेन ओपर' (थ्री पेनी ओपेरा) का मंचन हुआ, जिसने ब्रेष्ट को आशातीत ख्याति दिलायी। इस नाटक के अत्यधिक लोकप्रिय होने का एक बड़ा कारण कुर्त वाइल्स का मोहक संगीत भी था। 9 मार्च 1930 को लाइपत्सिग में एक और ओपेरा 'राइज़ एण्ड फ़ॉल ऑफ़ द सिटी महोगनी' का सफल मंचन हुआ। इसका संगीत भी कुर्त वाइल्स ने ही तैयार किया था।

इन नाटकों में ब्रेष्ट ने अराजकता, यौनलिप्सा, लालच और हिंसा को पूँजीवादी समाज की निरंकुशता और खुदगर्जी की देन माना है। इसी क्रम में ब्रेष्ट ने और भी कई शिक्षात्मक नाटक व ओपेरा (Didactic plays and operas) लिखे, जिनका मक़सद आम जनता को मार्क्सवाद का आत्मानुशासन और आत्मनिषेध समझाना था। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इन शिक्षात्मक नाटकों में भी ब्रेष्ट ने कलात्मकता के बेहतरीन मानदण्डों को बरकरार रखा है। ज़ाहिर है ऐसा करने में उन्होंने अपने शुरुआती लेखन की ओजस्विता और बेलाग

कथन-शैली का बख़ूबी निर्वाह किया है। इस कड़ी के अन्तर्गत लिखे गये नाटकों में मार्क्सवादी आत्मानुशासन का यहाँ तक अनुपालन किया गया है कि व्यक्ति खुद अपना बलिदान तक करने को राजी हो जाता है। 'देर या जागर उण्ट देर नाइनजागर' (ही हू सेज़ यस एण्ड ही हू सेज़ नो) नाटक भी एक सामूहिक उद्देश्य के लिए आत्मोत्सर्ग की समस्या पर केन्द्रित है। 1930 में मंचित दो नाटक 'दी आउसनामे उण्ट दी रेगल' (द एक्सेप्शन एण्ड द रूल) और 'दी मासनामे' (द मेज़र्स टेकन) भी शिक्षात्मक नाटकों में उत्तम ठहरते हैं। 'दी मासनामे' (हिन्दी में 'फ़ैसला') ब्रेष्ट के शिक्षात्मक नाटकों में उत्कृष्ट कृति मानी जाती है। इसका संगीत हंस आइसलर ने तैयार किया था। इस नाटक की कहानी में यह दिखाया गया है कि चीनी क्रान्ति के दौरान एक कम्युनिस्ट युवा क्रान्तिकारी जो पार्टी अनुशासन तोड़ डालता है, बाद में इस बात के लिए राजी हो जाता है कि उसका सफ़ाया कर दिया जाये। वह तर्क देता है कि ऐसा करने पर जिस जनसंघर्ष को उसने ख़तरे में डाला है, वह पुनः जारी रह सकता है।

इन छोटे शिक्षात्मक नाटकों के बाद ब्रेष्ट ने दो लम्बे शिक्षात्मक नाटक और लिखे। इस कड़ी में पहला लम्बा नाटक उन्होंने मैक्सिम गोर्की के उपन्यास 'द मदर' की कथा को आधार बनाकर यही शीर्षक देकर लिखा, जिसका मंचन 12 जनवरी 1932 को हुआ। दूसरा नाटक उन्होंने 'स्टॉकयार्ड्स का सेण्ट जुआन' लिखा। इस नाटक के ज़रिये उन्होंने 1929 की भयानक आर्थिक मन्दी के कारणों का पर्दाफ़ाश - शिकागो गोश्तमण्डी के उतार-चढ़ाव के ज़रिये दिखाया था। यह नाटक जिन दिनों लिखा गया, तब तक जर्मनी की राजनीतिक स्थिति काफ़ी बदहाल हो चुकी थी, अतः इस नाटक का मंचन सम्भव नहीं हो सका। अलबत्ता काफ़ी काँट-छाँट करने के बाद 11 अप्रैल 1932 को इस नाटक का रेडियो रूपान्तरण अवश्य प्रसारित किया गया था।

30 जनवरी 1933 को जब हिटलर जर्मनी की सत्ता पर काबिज़ हुआ, तब तक यह साफ़ हो चुका था कि ब्रेष्ट अब जर्मनी में नहीं रह सकेंगे। फलस्वरूप ब्रेष्ट के जीवन में निर्वासन का लम्बा सिलसिला शुरू हुआ। सबसे पहले वह जर्मनी से निकलकर डेनमार्क आये, जहाँ फिन टापू पर सेवेण्डबोर्ग नामक क़स्बे में उन्होंने अपना ठिकाना जमाया। हिटलर के शासन के पहले वर्ष के दौरान सेवेण्डबोर्ग में रहते हुए उन्होंने जो नाटक लिखे, उनकी विषयवस्तु ज़्यादातर प्रचारात्मक थी। अतः इनका महत्व काफ़ी हद तक अल्पकालिक ही रहा। मसलन नस्लवाद पर करारा व्यंग्य के रूप में लिखित उनका नाटक 'द राउण्ड हेड्स एण्ड द पीकहेड्स' तथा उस दौरान हिटलर की जर्मनी में छाये खौफ़ को दर्शाने वाले छोटे-छोटे एकांकी नाटकों का संग्रह 'फ़ीयर्स एण्ड

मिज़रीज़ ऑफ़ द थर्ड राइख'। एक और नाटक उन्होंने स्पेनी गृहयुद्ध की विभीषिका पर भी लिखा, जिसका शीर्षक 'सेनेरा कारार की रायफ़ल' (सेनेरा कारार्स रायफ़ल) था।

मार्च 1938 में जर्मनी द्वारा आस्ट्रिया का अधिग्रहण करने के बाद ब्रेष्ट को यह महसूस होने लगा था कि अब किसी भी सूरत में युद्ध को टाला जाना सम्भव नहीं है और ऐसी परिस्थिति में भविष्य में जो कुछ होने वाला है, उसे बदलना उनके बूते के बाहर है। यह सोचकर उन्होंने अपने लेखन को गम्भीर वैचारिक दर्शन की ओर मोड़ना ही सर्वोपरि समझा और पूरे मनोयोग से इसी दिशा में जुट गये। इस प्रकार ब्रेष्ट के रचनात्मक संसार का सर्वाधिक सर्जनात्मक युग शुरू हुआ। ब्रेष्ट ने अपने शुरुआती जीवन की रचनात्मक ऊर्जा और शिक्षात्मक युग के वैचारिक अनुशासन को मिलाकर इस दौरान अपनी रचनाओं में एक गहरी काव्यरूपकता देकर उसे नवीनीकृत किया। इस दौर का सर्वाधिक उल्लेखनीय नाटक 'द लाइफ़ ऑफ़ गैलीलियो' है, जो एक ऐसे संसार में रह रहे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक की साहसपूर्ण ज़िम्मेदारी व्यक्त करता है, जो चारों ओर अपने को प्रतिद्वन्द्वियों से घिरा हुआ पाता है। इस दौर का दूसरा महत्वपूर्ण नाटक 'द गुड वीमेन ऑफ़ सेजुआँ' है। इस नाटक का कथासार यह है कि लालच पर आधारित समाज में यह क़तई सम्भव नहीं है कि वहाँ अच्छे आदमी मिल जायें। एक और नाटक ब्रेष्ट ने 'तीस वर्षीय युद्ध' (थर्टी इयर्स वार) की त्रासदी पर 'मदर करेज एण्ड हर चिल्ड्रन' नाम से लिखा। इस नाटक में ब्रेष्ट ने यह दिखाया है कि युद्ध की क्रूरताओं के लिए सीधे-सरल लोग भी दोषी होते हैं, ख़ासकर जब ऐसे लोग अपने छोटे-मोटे क्रियाकलापों की वजह से युद्ध में सहायक होकर उसे तरजीह देते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध का ख़तरा ज्यों-ज्यों सामने आ रहा था, ब्रेष्ट को यह लगने लगा था कि अब उनका डेनमार्क में रह पाना भी सुरक्षित नहीं होगा। यह सोचकर वह अप्रैल 1939 में स्वीडन और एक वर्ष बाद फ़िनलैण्ड चले आये। फ़िनलैण्ड की पृष्ठभूमि पर उन्होंने वहाँ अपना नया नाटक - 'मिस्टर पुन्तीला और उसका सेवक माती' (मिस्टर पुण्टीला एण्ड हिज़ सर्वेण्ट माटी) लिखा। इस नाटक में ब्रेष्ट ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि पूँजीवादी निपुणता और मानवीय उदारता - इन दो तत्वों का सामंजस्य होना असम्भव है। इसी दौर में उन्होंने 'द रेज़स्टिबल राइज़ ऑफ़ अर्तुरी उई' लिखा, जो तानाशाह हिटलर के उत्थान पर एक ज़बरदस्त प्रहसन (कैरीकेचर) है। इस नाटक में हिटलर की तुलना शिकागो के गैंगस्टरों से की गयी है।

ब्रेष्ट शायद यूरोप में चारों तरफ़ मँडरा रहे युद्ध के ख़तरों से बचना चाहते

थे। इसीलिए प्रतिबद्ध मार्क्सवादी विचारक और कम्युनिस्ट समर्थक होते हुए भी उन्होंने सोवियत संघ में रुकना उचित नहीं समझा, जब कि 1936 से 1939 तक मास्को से प्रकाशित होने वाली एक जर्मन साहित्यिक पत्रिका में वह बतौर सहायक सम्पादक के रूप में जुड़े रहे थे। अत: मई 1941 में अमरीकी वीसा प्राप्त होने पर वह पूरे सोवियत संघ की यात्रा करने के बाद व्लादीवोस्तक पहुँचे और वहाँ से समुद्री जहाज़ पर बैठकर अमरीका चले आये। ब्रेष्ट के अमरीका पहुँचने के कुछ ही दिन बाद जर्मनी ने सोवियत संघ पर हमला बोल दिया था।

अमरीका में आकर ब्रेष्ट सान्ता मोनिका (कैलीफ़ोर्निया) में रहे, लेकिन बीच-बीच में लम्बे पड़ावों पर वह न्यूयार्क भी जाते रहे। हॉलीवुड फ़िल्म इण्डस्ट्री के लिए भी उन्होंने काम करने की कोशिश की, लेकिन इस दिशा में वह ज़्यादा सफल नहीं हो सके। उन्होंने केवल एक ही पटकथा सिनेमा वालों को बेची, जिसका शीर्षक 'हैंगमेन आल्जो दी' (Hangmen also die) था, 1942 में इस फ़िल्म का निर्देशन प्रसिद्ध निर्देशक फ़्रित्स लांग ने किया था। अमरीका प्रवास में ब्रेष्ट ने अपना अन्तिम महान नाटक 'द काकेशियन चॉक सर्किल' पूरा किया। इस नाटक में भी नेकी (Goodness) की समस्या का ज्वलन्त चित्रण किया गया है और यह दिखाया गया है कि एक आततायी समाज में इंसाफ़ पाने के रास्ते में क्या-क्या कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं?

हॉलीवुड में ब्रेख्त ब्रितानी अभिनेता चार्ल्स लाफ्टन से भी मिले। 'द लाइफ़ ऑफ़ गैलीलियो' के अंग्रेज़ी रूपान्तर पर उन्होंने लाफ्टन के साथ काम किया। लागटन ने 'गैलीलियो' के अंग्रेज़ी संस्करण का सफल मंचन जुलाई 1947 में लास एंजलीस में किया। एक समर्थ नाटककार और कवि के बतौर अमरीका में ब्रेष्ट को काफ़ी प्रसिद्धि और मान्यता मिलने लगी थी, लेकिन इसी बीच 30 अक्टूबर 1947 को उन्हें अमरीकी विरोधी गतिविधियों की जाँच के लिए गठित मैकार्थी कमेटी के समक्ष बतौर गवाह हाज़िर होना पड़ा। यह कमेटी हॉलीवुड के सिनेमाजगत में कम्युनिस्ट समर्थकों की जाँच-पड़ताल कर रही थी। मैकार्थी कमेटी के सामने ब्रेष्ट ने अपनी हाज़िरजवाबी और तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता का अद्भुत परिचय दिया, लेकिन कुल मिलाकर यह अनुभव उन्हें बेहद नागवार लगा और उसी के अगले दिन उन्होंने अमरीका को अलविदा कहकर यूरोप के लिए प्रस्थान कर दिया।

अमरीका से लौटकर ब्रेष्ट ने सर्वप्रथम स्विट्ज़रलैण्ड में अपना ठिकाना जमाया। यहाँ रहते हुए वह उन सम्भावनाओं का पता भी लगाते रहे कि कहाँ रहकर वह अपनी विचारधारा के नाटकों का मंचन बेहतर ढंग से कर सकेंगे। इस

दिशा में वह आस्ट्रिया को उपयुक्त समझते थे, क्योंकि वहाँ की भाषा भी जर्मन थी और वहाँ से वह पूर्वी और पश्चिमी दोनों जर्मन देशों के बीच आ-जा सकते थे। बीच में एक मौक़ा ऐसा भी आया जब उन्हें यह लगने लगा था कि साल्सबुर्ग महोत्सव में उन्हें कला निदेशक का पद दिया जा सकता है। फलस्वरूप उन्होंने आस्ट्रियाई नागरिकता के लिए प्रार्थनापत्र दे दिया था, परन्तु इसी बीच अक्टूबर 1948 में उन्हें 'मदर करेज' के मंचन के लिए पूर्वी बर्लिन आने का न्यौता मिला। पूर्वी बर्लिन में यह नाटक बेहद सफल रहा। नाटक के मंचन के बाद ब्रेष्ट पुनः 11 जनवरी 1949 को वापस ज्यूरिख़ चले आये। ज्यूरिख़ पहुँचकर उन्होंने एक बार फिर आस्ट्रिया की नागरिकता के लिए नये सिरे से दबाव डालना शुरू किया ही था कि तभी पूर्वी जर्मनी से उन्हें इस आशय का प्रस्ताव मिला कि वहाँ रहकर वह अपनी स्वयं की नाट्य मण्डली का संचालन कर सकते हैं। यह प्रस्ताव उनकी समझ में आ गया और आख़िरकार उन्होंने पूर्वी बर्लिन जाने का फ़ैसला कर लिया। यहाँ आकर वह 'बर्लिनर इनसेम्बले' की स्थापना में जुट गये। 12 नवम्बर 1949 को 'पुन्तीला' नाटक के मंचन के साथ उन्होंने विधिवत रूप से इनसेम्बले का उद्घाटन किया। पूर्वी बर्लिन में अपना काम शुरू कर चुकने के बावजूद ब्रेष्ट बराबर यह चाहते रहे कि अपने नाटकों का मंचन वह पूर्वी जर्मनी से बाहर भी करते रहें, इसलिए उन्होंने आस्ट्रियाई राष्ट्रीयता लेने की कोशिश की, जो उन्हें अप्रैल 1950 में स्वीकृत हुई। इसी के साथ उन्होंने अपने नाटकों के सर्वाधिकार भी पश्चिमी जर्मनी के प्रकाशक – 'सुरकाम्प फेरलाग' को दिये। इस तरह उन्होंने पूर्वी जर्मनी की बाध्यता (सेंसरशिप) से अपने को काफ़ी हद तक मुक्त कर लिया था और पश्चिम में थोड़ा-बहुत अपनी कमाई का ज़रिया भी खुला रख छोड़ा था।

पूर्वी बर्लिन में ब्रेष्ट ने अपने उन नाटकों का मंचन किया, जो उन्होंने अपने निर्वासन काल में लिखे थे। मंचन के दौरान उन्होंने अपनी विचारधारा के अनुरूप इन नाटकों में ज़रूरी संशोधन एवं संवर्द्धन भी किये। पूर्वी जर्मनी में आने से पहले 1948 में ज्यूरिख़ में रहते हुए उन्होंने अपना 'संक्षिप्त नाट्यशास्त्र' भी तैयार कर डाला था।

ब्रेष्ट ने अपने नाटकों के लिए जो विचारधारा प्रतिपादित की, उसे उन्होंने इपिक थियेटर (लोकनाटक) का नाम दिया। उन्होंने अभीष्ट मार्क्सवादी नाटक वही माना जो अरस्तूवादी नाटकों की उस परम्परा से अलग खड़ा हो, जिसमें यह माना जाता है कि दर्शक जो कुछ मंच पर घटित होते देख रहा है, यह मान कर देख रहा है कि वह सारा कुछ उसके सामने तत्काल घटित हो रहा है। इसके विपरीत ब्रेष्ट का यह मानना था कि यदि अतीत के नायकों – ओडीपस, किंग

लीयर अथवा हेमलेट – के मनोभावों की आज के दर्शकों पर वही प्रतिक्रिया हो सकती है, जो उनके युगों में होती थी, तब मार्क्सवादी दर्शन की यह विचारधारा कि मानवीय स्वभाव स्थिर न रहकर निरन्तर बदलती परिस्थितियों में परिवर्तनशील है, ग़लत सिद्ध हो जायेगी। ब्रेष्ट ने इसीलिए यह तर्क दिया कि एक नाटक को – जो कुछ वह अपने पात्रों द्वारा मंच पर घटित होता दिखा रहा है, उससे – दर्शकों का तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश हरगिज़ नहीं करनी चाहिए और न ही दर्शकों के दिमाग़ में पात्रों की ऐतिहासिकता का 'सच' घुसाने की कोशिश करनी चाहिए। बल्कि इसके विपरीत एक नाटक को ऐसी भूमिका अदा करनी चाहिए, जैसा लोकगायक की कला करती है – जिसमें कि दर्शक को बार-बार यह आगाह किया जाता है कि जो कुछ वह मंच पर घटित होते देख रहा है, वह महज़ अतीत का लेखा-जोखा है, जिसे उसे (दर्शक) अपनी पैनी निगाह के साथ कुछ फ़ासला रखकर (with detachment) देखना चाहिए। कुल मिलाकर ब्रेष्ट ने अपने इपिक थियेटर (लोकनाटक) का आधार कथनात्मक (नैरेटिव) अथवा अ-नाटकीय (अनड्रामाटिक) ही माना। इपिक थियेटर का सम्बन्ध उन्होंने सीधे-सीधे अलगाव/पृथकपन/अजनबीपन/दूरस्थता अथवा फ़ासला जैसे तत्वों से जोड़ा और इस तरह के अलगाव प्रभाव (alienation effect) को पैदा करने के लिए उन्होंने कई तरह की विधियों का प्रयोग अपने नाटकों में किया, जिनके ज़रिये दर्शक को बार-बार यह चेताया जाता है कि उसके समक्ष मंच पर यथार्थ (रियलिटी) को किसी भ्रम (इल्यूजन) के रूप में न दिखाकर मानव स्वभाव के एक नमूने (मॉडल) के बतौर पेश किया जा रहा है। अर्थात दर्शक सिर्फ़ एक नाटक देख रहा है, कोई हक़ीक़त नहीं। वाल्टर बेंजामिन ने ब्रेष्ट के इपिक थियेटर पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि वह एक साथ दो तरह का प्रभाव दर्शक पर छोड़ता है : ब्रेष्ट जहाँ नाटकीय तत्वों को ध्वस्त करते हैं, वहाँ वह दर्शक को सोचने के लिए मजबूर करने के साथ-साथ एक अलग किस्म का हास्य पैदा करके उसे (दर्शक) तनावमुक्त भी करते हैं। बेंजामिन ब्रेष्टियन थियेटर (इपिक थियेटर) को समय के तल से फूटी हुई एक ऐसी वेगवती सतरंगी धारा मानते थे, जो कुछ क्षणों तक आकाश में मँडराती हुई फिर समय के तल पर आकर ख़त्म हो जाती है। युवा मार्क्सवादी आलोचकों में टेरी इगलटन का यह मानना है कि एर्न्स्ट ब्लाख, ग्यार्ग (ज्यार्ज) लूकाच, बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, वाल्टर बेंजामिन और थियोडोर अडोर्नो में से सिर्फ़ ब्रेष्ट ही ऐसे लेखक हैं, जिनमें कामदी का तत्व मिलता है। कुछ आलोचकों ने ब्रेष्ट की रचनाओं में कामदी, विनोदप्रियता (ह्यूमर) और विचारों का एक साथ अद्भुत निचोड़ माना है। जीवन के अन्तिम वर्षों में ब्रेष्ट अपने नाटकों की विचारधारा को 'द्वन्द्वात्मक

नाटक' (डायलेक्टिकल थियेटर) की संज्ञा देने लगे थे, लेकिन कमोबेश यह नया नाम भी 'इपिक थियेटर' का स्थानापन्न ही था। एक ख़ास विश्व दृष्टिकोण के ज़रिये ब्रेष्ट के नाटकों में जो रचनात्मक संश्लिष्टता पैदा हुई, उसके फलस्वरूप आधुनिक नाटक को ऐसी गहरी अन्तर्दृष्टि और चारित्रिक समृद्धता मिली, जो ब्रेष्ट से पूर्व लिखे जाने वाले तथाकथित आधुनिक नाटकों में एकदम ग़ायब थी।

1920 के आसपास जो ब्रेष्ट अपने रचना-संसार में बेहद उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी थे, छठे दशक के पूर्वार्द्ध में वही ब्रेष्ट पूर्वी जर्मनी के समाजवादी समाज के शिखर पुरुष के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनके निर्देशन में बर्लिनर इनसेम्बले ने विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की। सिर्फ़ उलब्रिख्त के शासनकाल (1951) में उन्हें कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ा। उलब्रिख्त शासन ने ब्रेष्ट के एक ओपेरा - 'द ट्रायल ऑफ़ लुकुलस' को, जिसे उन्होंने 1940 में प्रसारित एक रेडियो नाटक के आधार पर लिखा था, कुछ मंचनों के बाद शान्तिवाद का पोषक होने का आरोप लगाकर प्रदर्शन की अनुमति देने से मना कर दिया था। 1954 में 'बर्लिनर इनसेम्बले' अपनी निजी इमारत - सिफबाउरडम थियेटर में चला गया, जहाँ 1928 में कभी ब्रेष्ट के नाटक 'थ्री पेनी ओपेरा' ने धूम मचाई थी।

मई 1955 में ब्रेष्ट को लेनिन शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसे लेने वह मास्को गये। 27 अगस्त 1956 से बर्लिनर इनसेम्बले की टीम को लन्दन में अपने नाटकों का प्रदर्शन करने जाना था, लेकिन इससे कुछ ही दिन पहले मंगलवार 14 अगस्त 1956 को दिल का दौरा पड़ने से बीसवीं सदी के इस महान कवि-नाटककार का देहान्त हो गया।

नाटक के लिए एक अभीष्ट मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र का निर्माण करने की कोशिश में ब्रेष्ट कहाँ तक सफल हुए, इस प्रश्न पर विद्वानों में यद्यपि आज भी मतभेद क़ायम हैं, लेकिन एक समर्थ नाटककार और उससे भी बढ़कर एक सशक्त कवि के रूप में उनकी प्रतिष्ठा विश्व रंगमंच एवं कविता के फलक पर आज भी सन्देह से परे है। सामाजिक और राजनीतिक चेतना को लेखन की पहली शर्त मानते हुए ब्रेष्ट ने मार्क्सवाद के द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त को कविता में क़ायम रखा। व्यक्ति और समूह के बीच के वास्तविक तनावों को मज़बूती से पकड़ते हुए उन्होंने ख़ासकर छोटी कविताएँ ज़्यादा लिखीं। शब्दों की भरमार से कविता को बचाया और भाषा के सजीले कपड़ों को उतारते हुए नंगी और ठिठुरती हुई भाषा को समाज के निचले वर्गों तक पहुँचाया, जहाँ यह म्यान रहित भाषा कविता

को हथियार की शक्ल दे सकी। दोनों बड़ी लड़ाइयों के दौरान और बाद में भी जब कि यूरोप और अमरीका के बुर्जुआ कवियों ने कविता को विलास का साधन मानते हुए उसे सिर्फ़ सुविधाभोगी, सम्पन्न और पढ़े-लिखे आदमियों की थाती समझ रखा था, ब्रेष्ट मुस्तैदी के साथ अपनी कविता में जनता के पक्षधर की हैसियत से लड़ते रहे। ब्रेष्ट की यह कविता जर्मन साहित्य के न सिर्फ़ समकालीन बल्कि किसी भी युग के साहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में सुरक्षित रखे जाने के योग्य है।

कला और राजनीति पर अपने विचारों को प्रकट करते हुए ब्रेष्ट ने यह स्पष्ट किया कि कला का महत्व तभी तक है, जब तक कि मनुष्य जाति का अस्तित्व बरकरार है, मनुष्य का अस्तित्व यदि समाप्त हो जाता है तो कला भी स्वयं नष्ट हो जायेगी। उनका यह भी कहना था कि बहुत सारे ख़ूबसूरत शब्दों को एक साथ रख देनेभर से वह कला नहीं बन जाती है। महज़ इसी कारण ब्रेष्ट ने अपनी कविता में एक गँवारू काव्य भाषा का संसार भी रचा और अन्त तक इस लोकभाषा के ज़बरदस्त समर्थक बने रहे।

नाटक और कविता के अलावा 'कौयनर महाशय की कहानियों' तथा 'ब' महाशय की कहानियों में ब्रेष्ट ने शब्दों की जिस किफ़ायतशारी का परिचय दिया है, वह भी अन्यत्र दुर्लभ है। जर्मन साहित्य के एक समीक्षक सीगफ्रीड ने ब्रेष्ट की इन छोटी कहानियों को जर्मन गद्य का रत्न कहा है। सीगफ्रीड का यह भी मानना है कि ''क' महाशय का मनपसन्द जानवर' जैसी कहानी निश्चित रूप से ब्रेष्ट का 'सेल्फ़ पोर्ट्रेट' है। यानी ब्रेष्ट की नैतिकता, शिक्षाओं और बुद्धिमानी का मिलाजुला रूप। 'क' (कौयनर) सीरीज की कहानियों में 'क' महाशय या तो ब्रेष्ट स्वयं हैं, या फिर कम्युनिस्ट विचारों से लैस व्यक्ति है, जबकि 'ब' सीरीज में स्वयं ब्रेष्ट ही 'ब' हैं। 'ब' सीरीज के अंग्रेज़ी अनुवाद भी बहुत कम देखने को मिलते हैं। इस संग्रह में प्रस्तुत 'ब' सीरीज की कहानियों के अनुवाद मास्को से प्रकाशित ब्रेष्ट की चुनी हुई रचनाओं के संग्रह 'फारवेर्ट्स उण्ट निख्त फरगेशन' (1976) से लिये गये हैं। इस संग्रह में 'ब' महाशय की कहानियाँ परिशिष्ट के अन्तर्गत छपी हैं, जिनके बारे में यह टिप्पणी उद्धृत है कि ये कहानियाँ आन्द्रे म्यूलर और गेर्ड सेमर द्वारा ब्रेष्ट के कहे अनुसार (aufgeschrieben) लिखी गयी हैं।

मार्क्सवाद के प्रति ब्रेष्ट की प्रतिबद्धता ने उन्हें लिखने की गहरी आकुलता दी और साथ ही एक ऐसा सशक्त विश्व दृष्टिकोण भी दिया, जिसके ज़रिये वह दुनिया में जो कुछ घट रहा है, उसका वैज्ञानिक सर्वेक्षण-विश्लेषण साफ़-साफ़ करने में कामयाब रहे। इसी के साथ उनके भीतर एक मानवीय कवि

की जो ईमानदारी और छटपटाहट थी, उसने उन्हें चरित्रों के जीवन्त सच से कभी अलग नहीं होने दिया। अपनी रचनाओं में उन्होंने महज़ दुख का बखान नहीं किया बल्कि दुख के कारणों की जाँच-पड़ताल में भी गहराई तक गये। इस प्रकार नाटक के पात्रों का चित्रण करते हुए उन्होंने एक ओर जहाँ ईमानदार नाटककार की भूमिका निभाई, वहीं दूसरी ओर इसी सत्यनिष्ठा के चलते अन्तिम दौर के नाटकों में, यद्यपि उनकी अवधारणा मार्क्सवादी पाठ (text) के रूप में ही की गयी थी, वह मूलभूत उद्देश्यों से काफ़ी आगे निकल आये थे। एक सत्यनिष्ठ, ईमानदार और मानवीय व्यक्ति की रचनात्मक संवेदना की यह ऊँची छलाँग ही ब्रेष्ट को एक महान कवि और नाटककार के रूप में स्थापित कर गयी।

ब्रेष्ट की सीधी-सपाट, गँवई और काफ़ी हद तक रूखड़ भाषा को अनुवाद में उतार पाना काफ़ी मुश्किल काम है। इस संग्रह की चौथी कविता 'मैरी अ. को याद करते हुए' ब्रेष्ट की नोटबुक के हिसाब से उन्होंने बर्लिन जाते हुए ट्रेन में 21 फ़रवरी 1920 को लिखी थी। मैरी अ. से अर्थ आउग्सबुर्ग की रहने वाली एक महिला से है, जिसका पूरा नाम रोजी मैरी अमान था। ब्रेष्ट के प्रथम नाटक 'बाल' के प्रदर्शन पर 1926 में यह कविता गायी गयी थी और 1928 में इसका ग्रामोफ़ोन रिकार्ड भी बना था। संग्रह की कुछ कविताओं के अनुवाद में ख़ासकर 'विजय द्वार के नीचे से अनजान सैनिकों की कविता' तथा 'बको में लिखे गये शोकगीत' की पूरी कड़ी में मूल जर्मन से मिलाकर अनुवाद की भाषा, भाव और विचार को ठीक करने में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डा. अनिल भट्टी ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये, जिनके लिए मैं उनका विशेष आभारी हूँ। 'बको में लिखे गये शोकगीत' का रचनाकाल 1953 है। उन दिनों ब्रेष्ट बर्लिन के निकट बको नामक स्थान में रह रहे थे। वहीं एक झील के किनारे उन्होंने एक छोटा-सा मकान और बग़ीचा किराये पर ले रखा था। 'बको गीत' के 18वें चक्र में जिस रूसी किताब का ज़िक्र है, वह वोल्गा जलविद्युत योजना पर लिखा गया एक उपन्यास है। इसी उपन्यास की कुछ पंक्तियों को नवें चक्र की कविता में उद्धृत किया गया है। 13वें चक्र की कविता में 'एस.एस. मैन' का ज़िक्र आया है, जो हिटलर के शासनकाल में गेस्टापो की भाँति एक गुप्तचर संस्था के आदमी होते थे। चक्रवृत्त, लड़ियों या सायकिल के रूप में लिखित ब्रेष्ट की यह अन्तिम रचना है। अंग्रेज़ी में इस कविता की लड़ियाँ अक्सर अलग-अलग स्वतन्त्र रूप में भी अनूदित होकर छपती रही हैं।

यद्यपि इन रचनाओं के अनुवाद मैंने ज़्यादातर मूल जर्मन भाषा से ही किये हैं, फिर भी जहाँ तक सम्भव हो सका है, इनके अंग्रेज़ी अनुवादों से भी मैंने कुछ मदद ली है। जॉन विलेट और मिशेल हम्बुर्गर के अनुवाद मुझे ज़्यादा सही लगे,

जिनसे मेरा काम थोड़ा आसान हुआ। नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान कुछ कविताओं के अनुवाद में मुझे असिस्टेण्ट प्रोफ़ेसर सुश्री रेखा कामथ और सहपाठी मित्र हीरेन्द्र चटर्जी ने समय-समय पर कुछ उपयोगी सुझाव दिये, एक लम्बे अन्तराल के बावजूद जिन्हें धन्यवाद देना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। इसी क्रम में मैं अपने अन्तरंग मित्र प्रभाती नौटियाल का भी विशेष आभारी हूँ, जो समय-समय पर जे.एन.यू. की लाइब्रेरी से मूल जर्मन कविताओं की फ़ोटो अथवा टाइप प्रतियाँ मेरे लिए लखनऊ भेजते रहे। नौटियाल जी का काम कविताओं के काल निर्धारण करने में मेरे लिए काफ़ी उपयोगी सिद्ध हुआ।

अन्त में इस पुस्तक के प्रकाशक श्री सत्येन्द्र का भी मैं इसलिए अहसानमन्द रहूँगा क्योंकि उन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखाकर रात-दिन की मेहनत के बाद जन्मशताब्दी वर्ष में यह पुस्तक ब्रेष्ट के प्रशंसकों को उपलब्ध करायी।

- मोहन थपलियाल

9 जनवरी 1998

एच-2/641, जानकीपुरम
कुर्सी रोड, लखनऊ-226021



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, 10 फ़रवरी 1898–14 अगस्त 1956



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, 1922



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, 1928



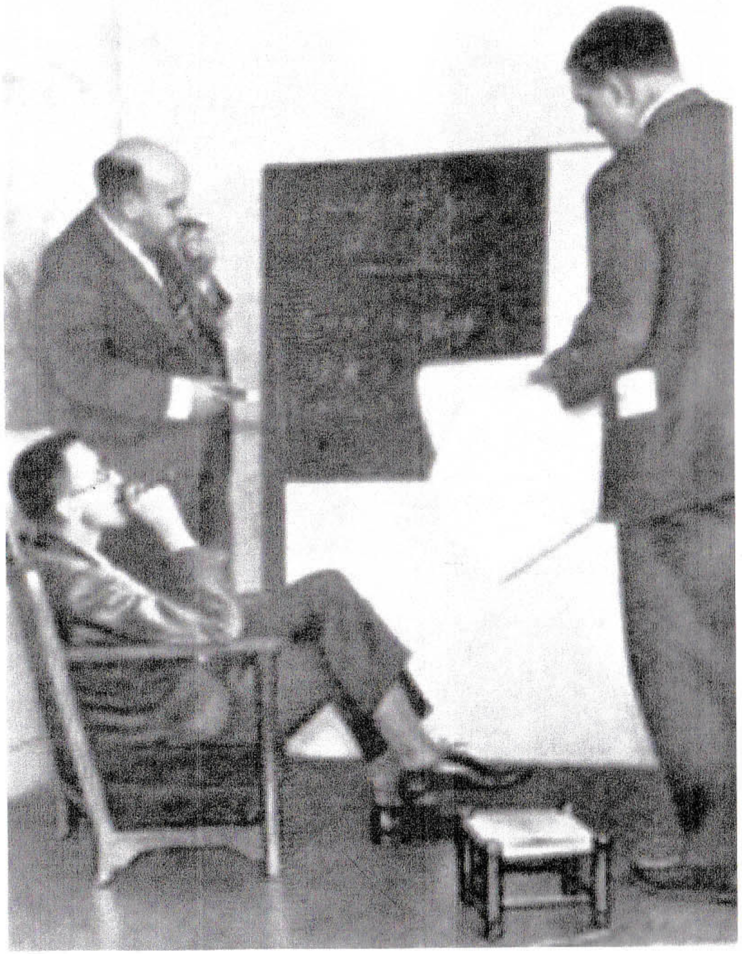
बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, पोर्ट्रेट – रुडोल्फ़ श्लिख्टर *1922*



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, के. वैलेंटिन के साथ एक मंच पर



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, *1934*



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, हान्स आइसलर और ज़ेड दुदोव के साथ, 1931





इल्या इहरेनबर्ग
और
बेर्टोल्ट ब्रेष्ट



बेर्टोल्ट ब्रेष्ट और मार्टिन एण्डरसन नेक्सो

Der kbrennende Baum

जलता हुआ पेड़

शाम के धूसर लाल धुएँरे में
हम देखते हैं लाल ऊँची लपटों को
सुलगती-बेधती काले आसमान को
उमस भरे सन्नाटे में उधर खेतों के बीच
चिटचिटाता हुआ
जलता है पेड़।
भयाकुल एक-दूसरे को घूरती - ऊँची तनती शाखाएँ
काली लाल चिनगारियों की बौछार का
चौगिर्द छाया पैशाचिक - उद्दण्ड नाच।
धुएँ के बीच धधकता अग्निज्वाल
थरथराती-झुलसती पत्तियों का उजड्ड नाच

राख होने की खुशी में चीख़ती - उन्मुक्त
खिल्ली उड़ाते पुराने तने के ओर-पोर।
रात में अब भी थिर और दैदीप्यमान
किसी ऐतिहासिक योद्धा की भाँति, थकाहारा - शिकस्त
इस विपत्ति के बीच अभी तक
शहनशाह की तरह
खड़ा है जलता हुआ पेड़।

अचानक तन उठता है - काली, कठोर शाखाओं की ओर
मुँह पर झेलता लाल नीली लपटों की ताबड़तोड़ मार
क्षण-भर को ठहरता ऊँचा - काले आकाश के बीचोबीच
फिर विस्फोटित होता है लाल चिनगारों के बीच
और नाचने लगता है सब कुछ साथ-साथ।

(1913-20)

Meine Mutter

मेरी माँ

और जब वह नहीं रही, उन्होंने उसे
मिट्टी में गाड़ दिया
फूल खिलते रहे, तितलियाँ उसके ऊपर
बाज़ीगरी दिखाती रहीं...

वह इतनी हलकी कि मुश्किल से
मिट्टी धँसी होगी उसके बोझ से
कितनी मुश्किल आयी होगी,
उसे इतना अधिक हलका बनाने में।

(1920-25)

Jahr für Jahr

साल दर साल

1. अब, इस रात में, जब मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
सफ़ेद बादल गुमसुम आकाश में घुमड़ते हैं
बजरी पर पानी का गुस्सा उतरता है
और बंजर ज़मीन के ऊपर थरथराती है हवा।

2. झरने झरते हैं
पहाड़ की ढाल पर
हर साल
ऊपर आकाश में
मौजूद हैं बादल सदैव।

3. बाद में, जब साल होंगे वीरान
बादल और कोहरा तब भी रहेंगे मौजूद
पानी गुस्सा उतारता रहेगा बजरी पर
और बंजर ज़मीन के ऊपर थरथराती रहेगी हवा।

(1920-25)

Erinnerung an die Marie A.

मैरी अ. को याद करते हुए

उदास सितम्बर महीने का कोई एक दिन था वह
आलूबुखारे के पेड़ की झीनी छाँह में चुपचाप
मैंने जकड़ा हुआ था उसे, बेहद पीला और ख़ामोश –
मेरा वह प्यार।

मानो स्वप्न था वह, जिसे किसी भी हालत में नहीं मिटना चाहिए।

ग्रीष्म के चमकते आकाश में हमारे ऊपर
एक बादल था, जिस पर टिकी रहीं मेरी आँखें देर तक
एकदम चिट्ट सफ़ेद और हमसे बहुत ऊपर
जब मैंने दुबारा ऊपर देखा, वह ग़ायब हो चुका था।

और उस दिन के बाद से बहुत सारे चाँद
आसमान में आर-पार तैरते हुए डूब चुके हैं।

आलूबुखारे के पेड़ ईंधन की ज़रूरत के लिए काट डाले गये हैं

और यदि तुम पूछो, कैसा लगता है वह प्यार अब?
मुझे कहना ही होगा : सचमुच अब मुझे कुछ याद नहीं रहा

फिर भी मैं जान रहा हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो
लेकिन उसका चेहरा कैसा था, अब मुझे याद नहीं रहा
मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ : उस दिन मैंने उसे चूमा था
और जहाँ तक चुम्बन का सवाल है, उसे भी मैं बहुत
पहले भूल गया होता

लेकिन वह बादल जो आकाश में तैरता रहा था

उसे मैं अब भी जानता हूँ और हमेशा जानता रहूँगा
वह चिट्ट सफ़ेद था और बहुत ऊँचे मँडरा रहा था।

यह मुमकिन है कि आलूबुखारे के पेड़ अभी भी खिल रहे हों
उस महिला का सातवाँ बच्चा, वहाँ हो सकता है अभी भी
और वह बादल जो चन्द मिनटों के लिए उभर आया था अभी-अभी
जब मैंने ऊपर देखा – आकाश में वह ग़ायब हो चुका था।

(1920-25)

Von Armen B.B.

बेचारे बेर्टोल्ट ब्रेष्ट के बाबत

मैं, बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, काले जंगलों से आया
मेरी माँ मुझे शहरों तक ढो लायी
जब मैं उसकी कोख में था, और जंगलों की ठण्ड
रहेगी मौत के दिन तक मेरे साथ।

डामर के शहर में मैं घर पर हूँ ठीक ठाक
शुरू से ही प्रत्येक मृत्यु संस्कारों की
सामग्री से लैस :
अख़बारों, तम्बाकू और ब्राण्डी के साथ।
सन्दिग्ध व सुस्त और आख़िरकार सन्तुष्ट।

लोगों के साथ मिलनसार हूँ मैं
पहनता हूँ डरबी हैट कि उन्हीं जैसा लगूँ।
कहता हूँ – कोई अजीब-सी गन्ध वाले जानवर हैं ये।
और फिर – कोई बात नहीं, मैं भी हूँ वहीं।
सुबह के वक़्त ख़ाली आरामकुर्सियों पर
बैठता हूँ कुछ अदद औरतों के साथ
लापरवाही से उन्हें देख कहता हूँ उनसे
मैं ऐसा आदमी हूँ जिस पर नहीं कर सकती तुम यक़ीन
अपने इर्द-गिर्द शाम को जमा लेता हूँ मर्दों की चौकड़ी
और तब एक-दूसरे को "जनाब" पुकारते हुए हम
टाँगों को पसारते हुए मेरी मेज़ पर
कहते हैं वे – सब कुछ बेहतर होगा हमारे साथ।
और मैं नहीं पूछता – कि कब?
पौ फटते ही सुबह मूतने लगते हैं देवदार
और उनके आश्रित-परिन्दे – लगते हैं चिचियाने।

शहर में उस वक़्त मैं ख़ाली कर रहा होता हूँ अपना गिलास
और सिगरेट के टुकड़े को छिटकते हुए दूर
सोता हूँ परेशान।

यह मानते हुए कि अटूट हैं ये मकान
एक लापरवाह जाति की तरह बैठे रहे, घरों में हम।
(इस तरह बनाये हमने मैनहैट्टन टापू पर ऊँचे-ऊँचे कोटर
और अटलाण्टिक समुद्र को बहलाने, पतले महीन ऐण्टेना)

इन शहरों की बची रहेगी, जो इनसे होकर गुज़री है – हवा!
घर सुखी रखता है पेटू को : वह करता है उसे ख़ाली
हमें मालूम है कि हम हैं चलायमान
और नहीं होगा हमारे बाद : कुछ भी उल्लेखनीय।

उन जलजलों में जो आगे आयेंगे
है मुझे उम्मीद
भला इस तल्खी से क्यों हो जाने दूँ सुट्ट अपनी सिगार
मैं, बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, धकिया दिया गया था डामर के शहरों में
बहुत पहिले, काले जंगलों से, अपनी माँ के पेट में

(1925-28)

Gedicht vom Unbekannten Soldaten unter dem Triump bogen

विजय–द्वार के नीचे से अनजान सैनिकों की कविता

पहाड़ों और महासागरों से आये थे हम
उसे ख़त्म करने
जकड़ा हमने रस्सियों से उसे
जो पुख़्ताँ थीं मास्को से शहर मार्सीलीज तक
चप्पे-चप्पे पर जद में लाते हुए उसे
जिधर भागता वह
की हमने तोपें फिट – यदि वह हमें देखता।

चार साल से जमा होते रहे हम
अपना काम-धाम परे छोड़
रहे खड़े
उजड़ते शहरों में
परस्पर कई भाषाओं में चिल्लाते हुए हम
पहाड़ों से ठेठ महासागरों तक
जहाँ भी होता वह
किया ख़त्म उसे हमने आख़िर चौथे साल।

थे वहाँ पर
जिन्हें अपनी मौत की घड़ी में
चारों ओर घेरा डाले खड़ा देखने को
पैदा हुआ था वह –
हम सब।
और
थी वहाँ एक औरत, जिसने जन्मा था उसे

अवाक खड़ी रही वह, ज्यों ही हमने उसे पकड़ा
गर्भ ही फट पड़ा हो जैसे उसका!
आमीन!

ज्यों ही हमने उसे ख़त्म किया
की हमने ऐसी तजवीज़
हमारे घूँसों की चोटों से
हो जाये वह बदशक्ल
और कर दिया उसे इतना विकृत
कि वह मनुष्य की सन्तान ही न लगे।

लोहे के बीच से उठाकर उसे
ढो लाये घर अपने शहर
धर दाबा पत्थर तले
और सचमुच एक द्वार के नीचे
विजय-द्वार के नाम से जानते हैं जिसे लोग।
एक हज़ार क्विण्टल वज़नी
ताकि वह अनजान सिपाही
किसी भी हालत में न उठ खड़ा हो फ़ैसले के दिन
और विरूप हालत में
ईश्वर के सामने घूरते हुए
रोशनी में वहाँ तब
हम पहचान में आने वालों पर
उँगली उठाते हुए
कर दे खड़ा कटघरे में।

(1926)

Zweites Gedicht vom Unbekannten Soldaten unter dem Triump bogen

विजय–द्वार के नीचे से अनजान सैनिकों की दूसरी कविता

जो कुछ हमने तुमसे कहा
अनजान सिपाही के क़त्ल, मौत
और उसके चेहरे को क्षत-विक्षत करने के बारे में
साथ ही उसके हत्यारे की उन कोशिशों के बारे में
जो रोड़ा अटका देंगी उसकी वापसी में
हमने तुमसे कहा
सच है लेकिन
वह दुबारा नहीं लौटता।

उसका चेहरा जीवन्त था हमारी ही तरह
बुरादा होने तक और फिर नहीं रहा
न साबुत न चूर-चूर
और उसका मुख नहीं खोलेगा बात
प्रलय के दिन भी –
कि ऐसा कोई दिन
होगा ही नहीं।

बल्कि मर चुका है हमारा भाई
और निष्प्राण है उसके ऊपर का पत्थर भी
और हमें अफ़सोस है
प्रत्येक फ़ब्ती पर
और लेते हैं वापस अपनी शिकायतें

वहाँ काफ़ी समय बाद
जो वह भी था कभी

उसी की थाली पर खाता है एक नया आदमी
और कोई दूसरा बैठता है कुर्सी पर
जो उसकी थी कभी।
और दोस्तों के बीच उसके बारे में हुई बातचीत
जाने कब की हो चुकी है ख़ामोश।
खुश हों अपने आप में हम
कि भेंट में आती है हमारे पास
हर रोज़ एक नयी सुबह।

लेकिन हम प्रार्थना करते हैं तुमसे
जिन्होंने उसे क़त्ल किया है आख़िरकार –
शान्त हो! मत करो फिर से झगड़ों की शुरुआत
यूँ मर चुका है वह –
फिर भी हम प्रार्थना करते हैं
कि क्यों इस तरह तुमने उसे –
क्यों हमेशा ही, दोस्तो –
क़त्लेआम किया है :
कम से कम हटा तो दो
उसके ऊपर पड़े इस पत्थर को
कि क़तई ज़रूरी नहीं है यह विजय-दहाड़
और हमें करती है दुखी
क्योंकि हम जो बिसर चुके थे उस मृतक को बहुत पहले

यह पत्थर
दिलाता है हर रोज़
तुम्हारे बारे में ताज़ी याद
तुम जो कि अभी ज़िन्दा हो
और नहीं किये गये हो अभी तक क़त्ल –
आख़िर क्यों नहीं?

(1927)

Über die Städte

शहरों के बारे में

इनके नीचे गटर हैं
इनमें कुछ नहीं और इनके ऊपर धुआँ।
थे हम इनके बीच और कुछ मज़ा नहीं मारा
सपाटे से गुज़रे हम, गुज़र रहे हैं यह भी धीरे-धीरे।

(1927)

Das Brot der Hungernden ist aufgegessen

भूखों की रोटी हड़प ली गयी है

भूल चुका है आदमी मांस की शिनाख़्त
व्यर्थ ही भुला दिया गया है जनता का पसीना।
जयपत्रों के कुंज हो चुके हैं साफ़।

गोला बारूद के कारख़ानों की चिमनियों से
उठता है धुआँ।

(1933–47)

Kriegsindustrie

लड़ाई का कारोबार

एक घाटी पाट दी गयी है
और बना दी गयी है एक खाई।

(1933–47)

Der Anstreicher spricht von kommenden grossen Zeiten

आने वाले महान समय की रंगीन कहावत

जंगल पनपेंगे फिर भी
किसान पैदा करेंगे फिर भी
मौजूद रहेंगे शहर फिर भी
आदमी लेंगे सांस फिर भी।

(1933–47)

Fragen

सवालात

मुझे लिखना तुम क्या पहनती हो। क्या तुम्हारे पास पर्याप्त कपड़े हैं?
मुझे लिखना तुम्हें कैसी नींद आती है। क्या तुम्हारा बिस्तर आरामदेह है?
मुझे लिखना तुम कैसी दिखती हो। क्या पहले जैसी ही नज़र आती हो?
मुझे लिखना तुम किस चीज़ की कमी महसूस करती हो।
क्या वह मेरी बाँह तो नहीं?

मुझे बताना : क्या वे तुम्हें अकेला छोड़ते हैं?
क्या तुम अब भी डटी रह सकती हो? उनकी अगली चाल
भला क्या होगी?
तुम क्या कर रही हो? क्या जो कर रही हो, वह उचित है?
तुम किसके बारे में सोचती हो? क्या मेरे ही बारे में?

ऐसे तमाम सवालात मैं तुमसे पूछ सकता हूँ
यह बहुत ज़रूरी है कि इनके जो भी जवाब हों तुम मुझे दो।
यदि तुम थकी हो, मैं तुम्हें अपने हाथ का सहारा नहीं दे सकता हूँ;
या भूखी हो तो खाना नहीं खिला सकता हूँ।
यह ऐसे ही हुआ जैसे कि मैं दुनिया में न होऊँ।
यह ऐसे ही हुआ जैसे कि मैं तुम्हें भूल चुका होऊँ।

(1934-36)

Der Kreig der kommen wird

युद्ध जो आ रहा है

युद्ध जो आ रहा है
पहला युद्ध नहीं है।
इससे पहले भी युद्ध हुए थे।
पिछला युद्ध जब ख़त्म हुआ
तब कुछ विजेता बने और कुछ विजित।
विजितों के बीच आम आदमी भूखों मरा
विजेताओं के बीच भी मरा वह भूखा ही।

(1936-38)

General dein Tank ist ein starker Wagen

जनरल तुम्हारा टैंक एक मज़बूत वाहन है

जनरल, तुम्हारा टैंक एक मज़बूत वाहन है
वह मटियामेट कर डालता है जंगल को
और रौंद डालता है सैकड़ों आदमियों को
लेकिन उसमें एक नुक़्स है -
उसे एक ड्राइवर चाहिए।

जनरल, तुम्हारा बमवर्षक मज़बूत है
वह तूफ़ान से तेज़ उड़ता है और ढोता है
हाथी से भी अधिक।
लेकिन उसमें एक नुक़्स है -
उसे एक मिस्त्री चाहिए।

जनरल, आदमी कितना उपयोगी है
वह उड़ सकता है और मार सकता है।
लेकिन उसमें एक नुक़्स है -
वह सोच सकता है।

(1936-38)

Es ist Nacht

यह रात है

विवाहित जोड़े
बिस्तरों पर लेटे हैं
जवान औरतें
अनाथों को जन्म देंगी।

(1936-38)

Auf der Mauer Stand mit Kreide

दीवार पर खड़िया से लिखा था

दीवार पर खड़िया से लिखा था :
वे युद्ध चाहते हैं
जिस आदमी ने यह लिखा था
पहले ही धराशायी हो चुका है।

(1936-38)

Wenn die Oberen vom Frieden reden

नेता जब शान्ति की बात करते हैं

नेता जब शान्ति की बात करते हैं
आम आदमी जानता है
कि युद्ध सन्निकट है
नेता जब युद्ध को कोसते हैं
मोर्चे पर जाने का आदेश
हो चुका होता है।

(1936-38)

Wenn es zum Marschieren kommt

जब कूच हो रहा होता है

जब कूच हो रहा होता है
बहुतेरे लोग नहीं जानते
कि दुश्मन उनकी ही खोपड़ी पर
कूच कर रहा है।
वह आवाज़ जो उन्हें हुक्म देती है
उन्हीं के दुश्मन की आवाज़ होती है
और वह आदमी जो दुश्मन के बारे में बकता है
खुद दुश्मन होता है।

(1936–38)

Die Oberen sagen : Friede und Krieg

वे जो शिखर पर बैठे हैं, कहते हैं

वे जो शिखर पर बैठे हैं, कहते हैं :
शान्ति और युद्ध के सार-तत्व अलग-अलग हैं
लेकिन उनकी शान्ति और उनका युद्ध
हवा और तूफ़ान की तरह हैं
युद्ध उपजता है उनकी शान्ति से
जैसे माँ की कोख से पुत्र
माँ की डरावनी शक्ल की याद दिलाता हुआ
उनका युद्ध ख़त्म कर डालता है
जो कुछ उनकी शान्ति ने रख छोड़ा था।

(1936–38)

Die Oberen Sagen

ऊपर बैठने वालों का कहना है

ऊपर बैठने वालों का कहना है :
यह महानता का रास्ता है
जो नीचे धँसे हैं, उनका कहना है :
यह रास्ता क़ब्र का है।

(1936-38)

Liebes leid aus einer schlechten Zeit

बुरे वक़्त का प्रेमगीत

एक दूसरे के लिए नहीं थीं हममें
दोस्ताना भावनाएँ
तब भी अन्य जोड़ों की तरह हमने
सम्भोग किया।

रात में जब हम एक-दूसरे की बाँहों में लेटे थे
तुम्हारा चेहरा चन्द्रमा से अधिक
अजनबी था मेरे लिए।

और आज यदि मैं तुमसे बाज़ार में मिलता
और दोनों मछली ख़रीदते
तो फसाद खड़ा हो जाता :
एक-दूसरे के लिए नहीं थीं हममें
दोस्ताना भावनाएँ
रात में जब हम एक-दूसरे की बाँहों में लेटे थे।

(1936-38)

Der Abschied

विदाई

हम एक-दूसरे को गले लगाते हैं
मेरे हाथों की छुवन में तुम्हारा क़ीमती बदन है
तुम्हारे हाथों में मेरा नाचीज़।

कितनी हड़बड़ी का आलिंगन है यह
तुम एक लज़ीज़ दावत जीमने जा रही हो
मेरे पीछे पड़े हैं जल्लाद के आदमी।

हम मौसम और अपनी मज़बूत दोस्ती
के बारे में बतियाते हैं
किसी और चीज़ के बारे में बातें करना
बेहद तल्ख होता।

(1936-38)

1940 (4)

1940 (4)

कुहरे ने ढँक दिया है
सड़क
देवदार
खेत और
तोपख़ाना।

(1936-38)

Ich befinde mich auf dem Inselchen Lindingö

1940 (5)

इन दिनों मैं लिंडिंगो नामक छोटे-से टापू में हूँ
लेकिन इधर हाल ही में एक रात
मुझे दुखद स्वप्न हुए
मैने देखा – मैं एक शहर में था
और पाया कि वहाँ की गलियों के साइनबोर्ड
जर्मन में थे।
मैं जागा, पसीने से तरबतर,
देखा, देवदार के पेड़ को
रात की तरह काला मेरी खिड़की के आगे
और राहत महसूस की :
मैं, पराये देश में था।

(1936–38)

Mein junger sohn fraget mich

1940 (6)

मेरा छोटा लड़का मुझसे पूछता है : क्या मैं गणित सीखूँ?
क्या फ़ायदा है, मैं कहने को होता हूँ
कि रोटी के दो कौर एक से अधिक होते हैं
यह तुम एक दिन जान ही लोगे।

मेरा छोटा लड़का मुझसे पूछता है :
क्या मैं फ़्रांसीसी सीखूँ?
क्या फ़ायदा है, मैं कहने को होता हूँ
यह देश नेस्तनाबूद होने को है।
और यदि तुम अपने पेट को हाथों से मसलते हुए
कराह भरो, बिना तकलीफ़ के झट समझ लोगे।

मेरा छोटा लड़का मुझसे पूछता है : क्या मैं इतिहास पढ़ूँ?
क्या फ़ायदा है, मैं कहने को होता हूँ
अपने सिर को ज़मीन पर धँसाये रखना सीखो
तब शायद तुम ज़िन्दा रह सको।

(1936–38)

Verjagt mit gutem Grunde

अच्छे कारण के लिए खदेड़ा गया

खाते-पीते घर के बच्चों की तरह
मेरा लालन-पालन हुआ
मेरे माँ-बाप ने मेरे गले में
एक कॉलर बाँधा और
ख़ूब टहल-ख़िदमत करते हुए
मुझे पाला-पोसा और बड़ा किया
उन्होंने मुझे ऐसी शिक्षा दी ताकि
मैं दूसरों के ऊपर हुक्म वा रौब
गालिब कर सकूँ
लेकिन मैं जब सयाना हुआ
और अपना अड़ोस-पड़ोस देखा तो
अपने खेमे के लोग मुझे क़तई
नहीं भाये
न मुझे हुक्म देना भाता
न अपनी ख़िदमत
सो अपने खेमे के लोगों से नाता तोड़कर
मैं तुच्छ श्रेणी के लोगों के बीच जा बैठा।

इस प्रकार
उन्होंने एक विश्वासघाती को पाला-पोसा
अपनी सभी चालें उसे सिखाईं और
उसने वे सारे भेद दुश्मन को जाकर खोल दिये।

हाँ, मैं उनके भेद खोलकर रख देता हूँ
मैं लोगों के बीच जाकर उनकी
ठगी का पर्दाफ़ाश कर देता हूँ

मैं पहले ही बता आता हूँ
कि आगे क्या होगा, क्योंकि मैं
उनकी योजनाओं की अन्दरूनी जानकारी रखता हूँ।

उनके भ्रष्ट पण्डितों की संस्कृत
मैं बदल डालता हूँ शब्द-ब-शब्द
आम बोलचाल में और वह
दिखने लगती है साफ़-साफ़ गप्प-गीता।

इंसाफ़ के तराजुओं पर
वे कैसे डण्डी मारते हैं
यह पोल भी मैं खोल देता हूँ।
और उनके मुख़बिर बता आते हैं उन्हें
कि मैं ऐसे मौक़ों पर बेदख़ल लोगों के बीच
बैठता हूँ, जब वे बग़ावत
की योजना बना रहे होते हैं।

उन्होंने मेरे लिए चेतावनी भेजी
और मैंने जो कुछ भी जोड़ा था अपनी मेहनत से
वह छीन लिया
इस पर भी मैं जब बाज न आया
वे मुझे पकड़ने के लिए आये
हालाँकि उन्हें मेरे घर पर कुछ भी नहीं मिला
सिवाय उन पर्चों के
जिनमें जनता के ख़िलाफ़
उनकी काली करतूतों का ख़ुलासा था
सो, चटपट उन्होंने मेरे ख़िलाफ़
एक वारण्ट जारी किया
जिसमें आरोप था कि मैं तुच्छ विचारों का हूँ
यानी तुच्छ लोगों के तुच्छ विचार।
मैं जहाँ कहीं जाता
धनकुबेरों की आँख का काँटा सिद्ध होता,
लेकिन जो ख़ाली हाथ होते

वे मेरे ख़िलाफ़ जारी वारण्ट पढ़कर
मुझे यह कहते हुए
छुपने की जगह देते कि
"तुम्हें एक अच्छे कारण
के लिए खदेड़ा गया है।"

(1936-38)

An die Nachgebornen

अगली पीढ़ी के लिए

1.
सचमुच मैं अँधेरे युग में जी रहा हूँ
सीधी-सादी बात का मतलब बेवक़ूफ़ी है
और सपाट माथा दर्शाता है उदासीनता
वह, जो हँस रहा है
सिर्फ़ इसलिए कि भयानक ख़बरें
अभी उस तक नहीं पहुँची हैं

कैसा ज़माना है
कि पेड़ों के बारे में बातचीत भी लगभग जुर्म है
क्योंकि इसमें बहुत सारे कुकृत्यों के बारे में हमारी चुप्पी भी शामिल है।
वह जो चुपचाप सड़क पार कर रहा है
क्या वह अपने ख़तरे में पड़े हुए दोस्तों की पहुँच से बाहर नहीं है?
यह सच है : मैं अभी भी अपनी रोजी कमा रहा हूँ
लेकिन विश्वास करो, यह महज़ संयोग है
इसमें ऐसा कुछ नहीं है कि मेरी पेट-भराई का औचित्य सिद्ध हो सके
यह इत्तेफ़ाक है कि मुझे बख़्श दिया गया है
(क़िस्मत खोटी होगी तो मेरा ख़ात्मा हो जायेगा)
वे मुझसे कहते हैं : खा, पी और मौज कर क्योंकि तेरे पास है
लेकिन मैं कैसे खा-पी सकता हूँ
जबकि जो मैं खा रहा हूँ, वह भूखे से छीना हुआ है
और मेरा पानी का गिलास एक प्यासे मरते आदमी की ज़रूरत है।
और फिर भी मैं खाता और पीता हूँ।

मैं बुद्धिमान भी होना पसन्द करता
पुरानी पोथियाँ बतलाती हैं कि क्या है बुद्धिमानी :

दुनिया के टण्टों से खुद को दूर रखना
और छोटी-सी ज़िन्दगी निडर जीना
अहिंसा का पालन
और बुराई के बदले भलाई
अपनी इच्छाओं की पूर्ति के बजाय
उन्हें भूल जाना
यही बुद्धिमानी है
यही सब मेरे वश का नहीं
सचमुच मैं अँधेरे युग में जी रहा हूँ।

2.
मैं अराजकता के दौर में आया शहरों में
जब भूख का साम्राज्य था
बग़ावतों के दौरान मैं लोगों से मिला
और मैंने भी उनमें शिरकत की
इस तरह गुज़रा मेरा वक़्त
जो मुझे दुनिया में मिला था।

क़त्लेआम के बीच मैंने खाना खाया
नींद ली हत्यारों के बीच
प्रेम में रहा निपट लापरवाह
और कुदरत को देखा हड़बड़ी में
इस तरह गुज़रा मेरा वक़्त
जो मुझे दुनिया में मिला था।

मेरे ज़माने की सड़कें दलदल तक जाती थीं
भाषा ने मुझे क़ातिलों के हवाले कर दिया
मैं ज़्यादा कर ही क्या सकता था
फिर भी शासक और भी चैन से जमे रहते मेरे बग़ैर
यही थी मेरी उम्मीद
इस तरह गुज़रा मेरा वक़्त
जो मुझे दुनिया में मिला था।

ताक़त बहुत थोड़ी थी लक्ष्य था बहुत दूर,
वह दीखता था

साफ़, गो कि मेरे लिए पहुँचना था कठिन
इस तरह गुज़रा मेरा वक़्त
जो मुझे दुनिया में मिला था।

3.
तुम जो कि इस बाढ़ से उबरोगे
जिसमें कि हम डूब गये
जब हमारी कमजोरियों की बात करो
तो उस अँधेरे युग के बारे में भी सोचना
जिससे तुम बचे रहे
जूतों से ज़्यादा देश बदलते हुए
वर्ग-संघर्षों के बीच से हम गुज़रते रहे चिन्तित
जब सिर्फ़ अन्याय था और कोई प्रतिरोध नहीं था।

हम यह भी जानते हैं कि
कमीनगी के प्रति घृणा भी
थोबड़ा बिगाड़ देती है
अन्याय के ख़िलाफ़ गुस्सा भी
आवाज़ को सख़्त कर देता है
आह हम
जो भाईचारे की ज़मीन तैयार करना चाहते थे
ख़ुद नहीं निभा सके भाईचारा
लेकिन तुम जब ऐसे हालात आयें
कि आदमी, आदमी का मददगार हो
हमारे बारे में सोचना
तो रियायत के साथ!

(1936-38)

Hollywood

हालीवुड

रोज़ाना रोटी कमाने की ख़ातिर
मैं बाज़ार जाता हूँ, जहाँ झूठ ख़रीदे जाते हैं
उम्मीद के साथ
मैं विक्रेताओं के बीच अपनी जगह बना लेता हूँ।

(1941-47)

Zum Freitod des Flüchtlings W. B.

शरणार्थी वाल्टर बेंजामिन की आत्महत्या पर

क़त्ल का अहसास होने पर
मुझे बताया गया कि तुमने
खुद के ही ख़िलाफ़ उठा दिये अपने हाथ
आठ वर्षों तक निर्वासन में रहने के बाद
दुश्मन का उत्थान देखते हुए
आख़ीर में एक अ-पार सीमा पर रोकते हुए
वे कहते हैं, तुम पार कर गये, एक पारणीय सीमा।

साम्राज्यों का पतन होता है
गैंग लीडरान चल रहे हैं अकड़ कर
राजनेताओं की तरह
फ़ौजी वर्दियों के अलावा अब कहीं नहीं दिखेंगे आदमी

अत: भविष्य अब अँधेरे में है और
न्याय की ताक़तें कमजोर हैं
यह सब कुछ साफ़ था तुम्हारे सामने
जब तुमने अपने कष्टयोग्य शरीर को नष्ट किया।

(1941-47)

Stolz

गौरव

अमरीकी सिपाही ने जब मुझसे कहा
कि खाते-पीते मध्यवर्ग की जर्मन लड़कियाँ
तम्बाकू के बदले और निम्न मध्य वर्ग की
चाकलेट के बदले में
ख़रीदी जा सकती हैं।
लेकिन भूख से तड़पते रूसी मज़दूर
कभी नहीं ख़रीदे जा सकते
मुझे गौरव महसूस हुआ।

(1941–47)

Alles wandelt sich

हर चीज़ बदलती है

हर चीज़ बदलती है।
अपनी हर आख़िरी सांस के साथ
तुम एक ताज़ा शुरुआत कर सकते हो।
लेकिन जो हो चुका, सो हो चुका।
जो पानी एक बार तुम शराब में
उँडेल चुके हो, उसे उलीच कर
बाहर नहीं कर सकते।

जो हो चुका, सो हो चुका है।
वह पानी जो एक बार तुम शराब में उँडेल चुके हो
उसे उलीच कर बाहर नहीं कर सकते
लेकिन
हर चीज़ बदलती है
अपनी हर आख़िरी सांस के साथ
तुम एक ताज़ा शुरुआत कर सकते हो।

(1941–47)

Die neuen Zeitalter

नया ज़माना

अचानक नहीं शुरू होता है नया ज़माना
मेरे दादा पहले ही एक नये ज़माने में रह रहे थे
मेरा पोता शायद पुराने ज़माने में ही रह रहा होगा।

नया गोश्त पुराने काँटों से ही खाया जाता रहा है

वे नहीं थीं कारें पहली
न टैंक
न हमारी छतों के ऊपर उड़ते हवाई जहाज़
न ही बमवर्षक

नये ट्रांसमीटरों के ज़रिये चली आयीं पुरानी बेवकूफ़ियाँ
बुद्धिमानी चली आयी मुँह जुबानी।

(1941–47)

Deutschland 1945

जर्मनी 1945

घरों के भीतर प्लेग से मौत है
घरों के बाहर ठण्ड से मौत है
तब हमारा ठिकाना कहाँ हो?

सुअरी ने हग डाला है अपने बिस्तर पर
सुअरी मेरी माँ है, मैंने कहा :
ओ मेरी माँ, ओ मेरी माँ,
तुमने यह क्या कर डाला मेरे साथ?

(1941–47)

Auf einen Chines ischen Theewurzellöwen aus den Bücherhallen

एक चीनी शेर की नक्काशी को देखकर

तुम्हारे पंजे देखकर
डरते हैं बुरे आदमी
तुम्हारा सौष्ठव देखकर
खुश होते हैं अच्छे आदमी
यही मैं चाहूँगा सुनना
अपनी कविता के बारे में।

(1941–47)

Epitaph für M.

एम. (मायकोवस्की) के लिए समाधिलेख

शार्क मछलियों को मैंने चकमा दिया
शेरों को मैंने छकाया
मुझे जिन्होंने हड़प लिया
वे खटमल थे।

(1941–47)

Die Freunde

दोस्त

मुझ नाटककार को
युद्ध ने कर दिया अलग, मेरे दोस्त रंगकर्मी से।
वे शहर जिनमें हमने काम किया, अब नहीं हैं कहीं।
जब कभी मैं शहरों के बीच से गुज़रता हूँ, जो कि अभी हैं।
अक्सर कहता हूँ- वह धुलाई का नीला कपड़ा वहाँ
मेरे दोस्त ने बहुत ख़ूबसूरती से रखा होता।

(1947-53)

Als unsere städte in schutt lagen

जब हमारे शहर बरबाद हुए

जब हमारे शहर बरबाद हुए
बूचड़ों की लड़ाई से नेस्तनाबूद
हमने उन्हें फिर से बनाना शुरू किया
ठण्ड, भूख और कमजोरी में।

मलबे लदे ठेलों को
खुद ही खींचा हमने, धूसर अतीत की तरह
नंगे हाथों खोदीं ईंटें हमने
ताकि हमारे बच्चे दूसरों के हाथों न बिकें
अपने बच्चों के लिए हमने बनाये तब
स्कूलों में कमरे और साफ़ किया स्कूलों को
और मांजा, पुराना कीचड़ भरा शताब्दियों का ज्ञान
ताकि वह बच्चों के लिए सुखद हो।

(1947-53)

Sprüche

मुहावरे

1.
जब मैं आवारा भटकता था
कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था मेरे पास
पता नहीं कहाँ मेरा टोप पड़ा था
पता नहीं कहाँ पिछले सात महीने।

2.
मुझे भरोसा नहीं तुम्हारी आँखों पर
तुम्हारे कानों पर भी भरोसा नहीं
तुम जिसे अँधेरा देखते हो
वह शायद रोशनी है।

(1947-53)

Wahrnehmung

अनुभूति

जब मैं वापस लौटा
भूरे तक नहीं थे मेरे बाल।
तब था मैं ख़ूब मस्त।

पहाड़ों की यातनाएँ हमारे पीछे हैं
मैदानों की हमारे सामने।

(1949)

Schwächen

कमजोरियाँ

कमजोरियाँ
तुम्हारी कोई नहीं थी
मेरी थी एक
मैं करता था प्यार।

(1950)



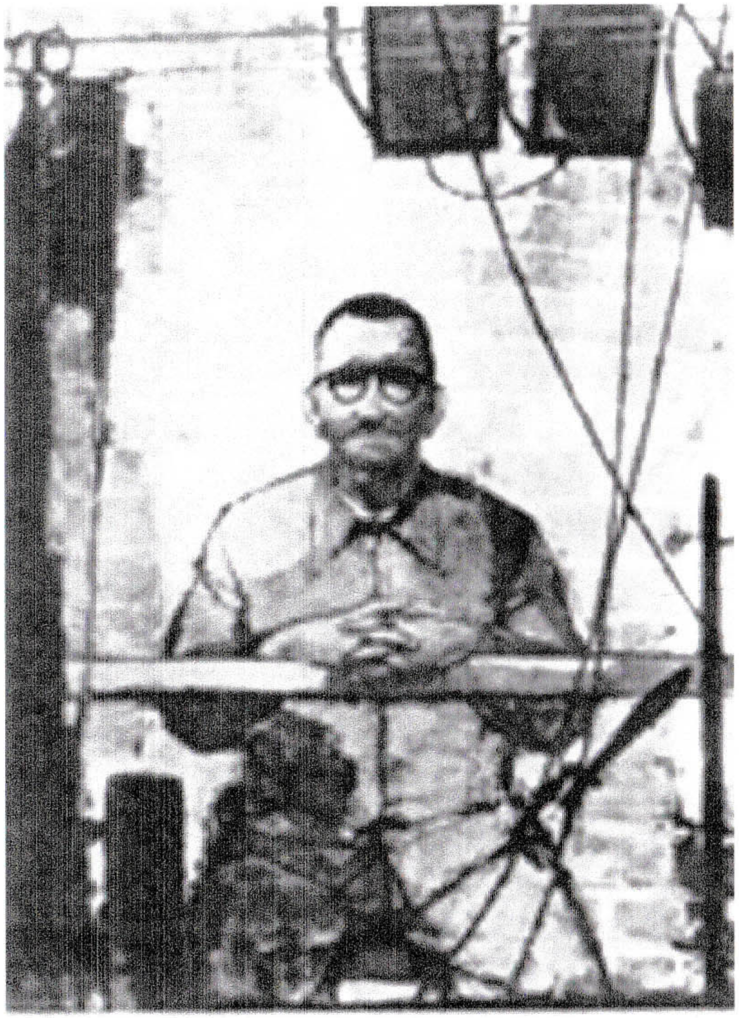
बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, 1956



डी. शोस्ताकोवित्श और बेर्टोल्ट ब्रेष्ट



ब्रेष्ट की पत्नी हेलेना वाइगल, पोर्ट्रेट - रुडोल्फ़ शिलख्टर



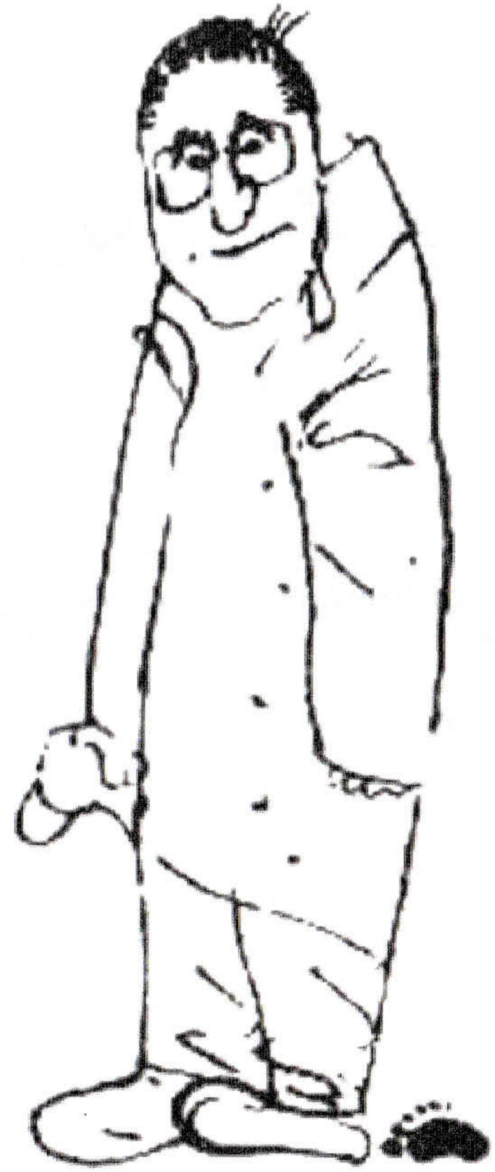
बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, बर्ट हेलर का स्केच



ब्रेष्ट, जर्मन मूर्तिशिल्प



ब्रेष्ट की डायरी का एक पृष्ठ



कैरिकेचर, स्तोप्का



कैरिकेचर, ज़ेड. लेंग्रेन

Buckower Elegien

बको में लिखे गये शोकगीत

(1953)



कैरिकेचर, सी. एम. जीटनर

I. Motto

आदर्श वाक्य

यदि वहाँ कोई हवा बह रही हो
मैं एक पाल फहरा सकता हूँ
यदि वहाँ कोई पाल नहीं हो
मैं लट्ठों और कपड़ों से बनाऊँगा।

II. Der Radwechsel

पहिया बदलते हुए

मैं सड़क की मेड़ पर बैठा हूँ
ड्राइवर पहिया बदलता है
मैं उस जगह को पसन्द नहीं करता जहाँ से आया हूँ
उस जगह को भी नहीं जहाँ जा रहा हूँ
मैं क्यों इतना बेताब हो रहा हूँ
उसे पहिया बदलते हुए देखकर?

III. Der Blumgarten

फूलों का बग़ीचा

देवदार और चिनारों के बीच नीचे झील की ओर
दीवाल और झरबेरियों से घिरा हुआ बग़ीचा
विविध मौसमी पौधों का, इतनी चतुराई से सुनियोजित
कि कुछ-न-कुछ फूलता रहे वहाँ मार्च से अक्टूबर तक

अलस्सुबह, वहाँ कभी-कदा
मैं बैठता हूँ और चाहता हूँ बैठा रहूँ प्रत्येक मौसम में
अलग-अलग हर अच्छे व बुरे मौसम में
लोगों को खुश करने की गरज से
इस या उस किसी को भी चाहते हुए।

IV. Die Lösung

समाधान

सत्रह जून के विप्लव के बाद
लेखक संघ के मन्त्री ने
स्तालिनाली शहर में पर्चे बाँटे
कि जनता सरकार का विश्वास खो चुकी है

और तभी दुबारा पा सकती है यदि दोगुनी मेहनत करे
ऐसे मौक़े पर क्या यह आसान नहीं होगा
सरकार के हित में
कि वह जनता को भंग कर कोई दूसरी चुन ले।

V. Gross zeit Veraten

महान युग ख़त्म हुआ

मैं ख़ूब जानता था कि शहर बनाये जा रहे हैं
मैं नहीं गया उन्हें देखने

इसका सांख्यिकी वालों से ताल्लुक है मैंने सोचा
न कि इतिहास से
क्या होगा शहरों के बनाने से,
यदि उन्हें बग़ैर लोगों की बुद्धिमानी के बनाया?

VI. Boser Morgen

एक बुरी सुबह

चाँदी जैसे चिनार के वृक्षों की लोकप्रिय सुन्दरता
आज एक कुरूप बूढ़ी औरत की तरह है और झील
एक गन्दा कीचड़ भरा झाग का कुण्ड – इसे मत छुओ
स्नैपड्रैगंस के बीच में फ़्यूशा की झाड़ियाँ बहुत घटिया और व्यर्थ हैं
लेकिन क्यों?
कल रात स्वप्न में मैंने देखा कि उँगलियाँ मेरी ओर इशारा कर रही हैं
जैसे कि एक कोढ़ी पर
वे काम के नाम पर कलंकित थीं
और टूट चुकी थीं
इतनी बड़ी लापरवाही! मैं चीख़ा
खुद को अपराधी महसूस करते हुए!

VII. Gewohnheiten, noch immer

आदतें, अभी तक

थालियाँ लापरवाह रख छोड़ी हैं
ताकि शोरबा छलक पड़े
एक गुर्राती आवाज़
हुक्म करती है – अब खाओ इसे!
वह प्रशा का गिद्ध
अपने ही चूज़ों के हलक़ के अन्दर
भोजन की बोटी-बोटी नोचता है।

VIII. Hisser Tag

गर्म दिन

तेज़ उमस वाला दिन।
बस्ता मेरे घुटनों पर टिका है,
मैं समरहाउस में बैठा हूँ
एक हरी डोंगी नज़र आती है बेंत के पेड़ों की ओट
डोंगी की गलही में
एक मोटी नन बैठी है भारी भरकम पोशाक में
सामने एक अधेड़ नहाने की पोशाक में
हू-ब-हू पादरी जैसा
और चप्पू खेने की जगह पर
एक बच्चा भरपूर ताक़त से डाँड खेते हुए
ठीक पुराने ज़माने की तरह, मैं सोचता हूँ
ठीक पुराने ज़माने की तरह!

IX. Die Wahrheit einigt

सच हमें जोड़ता है

दोस्तो मैं चाहता हूँ तुम सच को जानो और उसे बोलो!
मैदान छोड़ते थके-माँदे सम्राटों की तरह नहीं
कि 'आटा कल पहुँच जायेगा!'
बल्कि लेनिन की तरह
कि कल रात तक सब चौपट्ट हो जायेगा
यदि हम कुछ करें नहीं...
ठीक जैसे कि यह छोटा गीत -
"भाइयो यह किस के बारे में है
मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहूँगा
कि जिन मुश्किलात में हम आज फँसे हैं
उनसे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है"
दोस्तो इसे दृढ़ता से स्वीकारो
और स्थिति का सामना करो, जब तक कि...।

X. Der Rauch

धुआँ

झील के किनारे पेड़ों के नीचे
वह छोटा-सा घर
और उसकी छत से उठता हुआ धुआँ

बिना धुएँ के कितना बियाबान होता
वह घर, पेड़ और झील!

XI. Eisen

लोहा....

कल रात स्वप्न में
मैंने एक भयंकर तूफ़ान देखा
एक पाड़ भी उसकी चपेट में आया
सारी सलाखें उखड़ गयीं
जो सख़्त लोहे की थीं
लेकिन जो कुछ लकड़ी का था
वह झुका और क़ायम रहा।

XII. Tannen

देवदार

सुबह तड़के ही
ताँबई रंग के देवदार
जैसे कि मैं उन्हें देख रहा होऊँ
आधी सदी पूर्व
दो विश्वयुद्धों से पहले
जवान आँखों से।

XIII. Die Einarmige im Geholz

झाड़ी में हथियारबन्द आदमी

पसीने से सराबोर वह नीचे झुकता है
सूखी लकड़ियों के लिए
मच्छरदानी को सिर से परे ठेलता है
लकड़ियों का गट्ठर बहुत मुश्किल से
सँभाल पाता है घुटनों के बीच
पीठ सीधी करता है बोझ के भार से
और हाथों को उठाता है ऊपर
यह महसूस करने को कि बारिश हो रही है या नहीं
उठे हैं उसके हाथ
उस ख़ौफ़नाक "एस.एस. मैन" के।

XIV. Vor acht Jahren

आठ साल पहले

एक वक़्त था
जबकि सब कुछ फ़रक़ था यहाँ
कसाई की औरत सब कुछ जानती है
पोस्टमैन भी चलता था ठमकती चाल
और बिजलीवाला क्या था?

XV. Rudern, Gespräche

डोंगी खेते हुए बातचीत

शाम है। दो छोटी नावें
गुज़रती हैं धीरे-धीरे
दो जवान नंगे आदमी उनके भीतर -
एक दूसरे के सामने डाँड खेते हुए
बातें करते, बतियाते
एक दूसरे के सामने डाँड खेते हुए दोनों।

XVI. Beim lessen des Horaz

होरात्स (होरेज) को पढ़ते हुए

यहाँ तक कि बाढ़ भी
हमेशा के लिए नहीं रही
एक वक़्त आया
जब काले समुद्र का ज्वार उतर गया
हाँ, लेकिन कितना थोड़े
अन्त तक सलामत रहे!

XVII. Laute

आवाज़ें

शरद के आने पर
सफ़ेद चिनार के वृक्षों पर
बसेरा डाले हुए कौवों के झुण्ड
लेकिन पूरी गर्मियों भर
जब यह इलाक़ा चिड़ियों के बिना सूना था
सुनता रहा मैं
केवल मनुष्य की आवाज़ें
मेरी खुशी के लिए यही बहुत है।

XVIII. Bei der Lekture eine Sowjetischen Buches

एक रूसी किताब पढ़ते हुए

वोल्गा को पालतू बनाना
इतना आसान काम नहीं होगा, मैं पढ़ता हूँ

यह अपनी बेटियों - ओका, कामा, उंशा और यातुल्गा
को मदद के लिए बुला देगी
अपनी पोतियों - चुसेवाया और यात्का को भी
वह अपनी सारी ताक़त से बुला लेगी
सात हज़ार सहायक नदियों के जल-प्रवाह के साथ
प्रचण्ड आक्रोश में वह ध्वस्त कर देगी स्तालिनग्राद के बाँध को
आविष्कारों के फ़रिश्ते और ग्रीक आडिसस की
धूर्त चालबाज़ी की तरह
वह हर छिद्र का इस्तेमाल करेगी
दायें और बायें दोनों बाजुओं को पाटते हुए
और ज़मीन के नीचे भी सब कुछ रौंदते हुए
लेकिन मैं पढ़ता हूँ
कि रूसी लोग जो उसे प्यार करते हैं
उसके गीत गाते हैं
हाल ही में उसे जान सके हैं
और 1958 के आने तक
उसे पालतू बना देंगे
और फिर कैस्पियन मैदानों के काली मिट्टीवाले खेत
और बंजर जो कि उसके सौतेले बच्चे रहे हैं
उन्हें रोटी का इनाम देंगे।

XIX. Der Himmel dieses Sommers

इस ग्रीष्म का आकाश

झील के ऊपर एक लड़ाकू जहाज़ गुज़रता है
तैरती हुई नौकाओं से
बच्चे, औरतें और एक बूढ़ा ऊपर देखता है
नन्हे चूजों की तरह दिखते हैं वे इतनी दूरी से
दाने की चाह में चोंच खोले हुए।

XX. Die Kette

कन्नी

स्वप्न में एक इमारत के पास खड़ा था मैं
मैं एक मिस्त्री था हाथ में कन्नी पकड़े हुए
लेकिन ज्यों ही सीमेण्ट के लिए
मैं नीचे झुका
एक ज़ोरदार धड़ाके ने
मेरी कन्नी के दो टुकड़े कर डाले।

XXI. Die Musen

कला की इष्टदेवियाँ

फ़ौलादी कवि जब इन्हें पीटता है
देवियाँ और ऊँचे स्वरों में गाती हैं
सूजी आँखों से
वे उसका आदर करती हैं
पूँछ मटकाती हुई कुतियों की तरह
उनके नितम्ब फड़कते हैं पीड़ा से
और जाँघें वासना से।

XXII. Bei der Lekture eines spatgriechischen Dichters

एक पुराने ग्रीक कवि को पढ़ते हुए

उस वक़्त जबकि उनका पतन निश्चित था –
दुर्ग के भीतर मृतक के लिए शोकगीत शुरू हुआ –
शूरवीरों ने छोटे-छोटे टुकड़ों को
तरतीब से ठूँस कर तिपरते लकड़ी के द्वारों पर
ठूँस-ठूँस कर छोटे टुकड़ों को
फिर से बाँधी हिम्मत और आशा
शूरवीरों ने भी आख़िर।

Vergnügungen

सुख

सुबह खिड़की से बाहर का नज़ारा
फिर से मिली हुई पुरानी किताब
उल्लसित चेहरे
बर्फ़, मौसमों की आवा-जाही
अख़बार
कुत्ता
डायलेक्टिक्स
नहाना, तैरना
पुराना संगीत
आरामदेह जूते
जज़्ब करना
नया संगीत
लेखन, बाग़बानी
मुसाफ़िरी
गाना
मिलजुल कर रहना।

(1953-56)

Ich benötige keinen Grabstein

मैं कोई समाधि लेख नहीं चाहता

मैं कोई समाधि लेख नहीं चाहता, लेकिन
यदि तुम मेरे लिए चाहो
मेरी इच्छा है खुदाई के अक्षर हों -
उसने सुझाव दिये, हमने
उन पर अमल किया।
ऐसा शिलालेख ही
हमारा गौरव होगा।

(1953-56)

Schwierige Zeiten

मुश्किल घड़ी

लिखने की मेज़ पर खड़े होते ही
खिड़की से
देखता हूँ बग़ीचे में बूढ़ा झाड़
और चीन्हता हूँ कुछ लाल और कुछ काला-सा उसमें
कि मेरे जेहन में उभरता है तत्काल
वह झाड़ जो बचपन में ऑग्सबुर्ग में देखा था
लमहों तक उधेड़बुन में रहा मैं
पूरी गम्भीरता के साथ कि क्या जाऊँ मेज़ पर
अपना चश्मा उठाने,
फिर एक बार उन काली बेरों को
लाल शाखाओं पर देखने।

(1953-56)

Als ich in Weissen Krankezimmer der Charite

जब मैं अस्पताल के एक सफ़ेद कमरे में था

सुबह के क़रीब
जब मैं अस्पताल के एक सफ़ेद कमरे में जागा
और कोयल को सुना
तब, बूझा मैंने ख़ूब।
काफ़ी देर तक मुझे मौत का कोई डर नहीं रहा
क्योंकि ऐसा कुछ नहीं है जो मैं कभी खो सकूँ
बशर्ते, मैं न रहूँ खुद
इस वक़्त उस कामयाबी तक ले गया है
मेरी खुशी को
यह सब
कि तमाम कोयलों के गीत
रहेंगे मेरे बाद भी।

(1953–56)

Wechsel der Dinge

चीज़ें कैसे बदलती हैं?

और मैं पल में बूढ़ा था और था पल में जवान
सुबह बूढ़ा और शाम को जवान
और था बच्चा दुखों को याद करता
और याददाश्त खोया हुआ बूढ़ा।

दुखी तब भी जब जवान था मैं
दुखी अब भी कि बूढ़ा हूँ मैं
बहरहाल, कब होऊँगा खुश एक बार?
जल्दी होता तो बेहतर होता।

(1953–56)

Das Brot des Volkes

जनता की रोटी

इंसाफ़ जनता की रोटी है
वह कभी काफ़ी है, कभी नाकाफ़ी
कभी स्वादिष्ट है तो कभी बेस्वाद
जब रोटी दुर्लभ है तब चारों ओर भूख है
जब बेस्वाद है, तब असन्तोष।

ख़राब इंसाफ़ को फेंक डालो
बग़ैर प्यार के जो भूना गया हो
और बिना ज्ञान के गूँदा गया हो!
भूरा, पपड़ाया, महकहीन इंसाफ़
जो देर से मिले, बासी इंसाफ़ है!

यदि रोटी सुस्वादु और भरपेट है
तो बाक़ी भोजन के बारे में माफ़ किया जा सकता है
कोई आदमी एक साथ तमाम चीज़ें नहीं छक सकता।

इंसाफ़ की रोटी से पोषित
ऐसा काम हासिल किया जा सकता है
जिससे पर्याप्त मिलता है।

जिस तरह रोटी की ज़रूरत रोज़ है
इंसाफ़ की ज़रूरत भी रोज़ है
बल्कि दिन में कई-कई बार भी
उसकी ज़रूरत है।

सुबह से रात तक, काम पर, मौज लेते हुए
काम, जो कि एक तरह का उल्लास है
दुख के दिन और सुख के दिनों में भी
लोगों को चाहिए
रोज़-ब-रोज़ भरपूर, पौष्टिक, इंसाफ़ की रोटी।

इंसाफ़ की रोटी जब इतनी महत्वपूर्ण है
तब दोस्तो कौन उसे पकायेगा?
दूसरी रोटी कौन पकाता है?
दूसरी रोटी की तरह
इंसाफ़ की रोटी भी
जनता के हाथों ही पकनी चाहिए
भरपेट, पौष्टिक, रोज़-ब-रोज़।

(1953-56)

Höre beim reden!

जो बोलते हो उसे सुनो भी

अध्यापक, अक़सर मत कहो कि तुम सही हो
छात्रों को उसे महसूस कर लेने दो खुद-ब-खुद
सच को थोपो मत :
यह ठीक नहीं है सच के हक़ में
बोलते हो जो उसे सुनो भी।

(1953-56)

Und ich dachte immer

और मैं हमेशा सोचता था

और मैं हमेशा सोचता था :
एकदम सीधे-सादे शब्द ही पर्याप्त होने चाहिए
मैं जब कहूँ कि चीज़ों की असलियत क्या है
प्रत्येक का दिल छलनी हो जाना चाहिए
कि धँस जाओगे मिट्टी में एक दिन
यदि खुद नहीं खड़े हुए तुम
सचमुच तुम देखना एक दिन।

(1953-56)

Das Gewächshaus

पौदघर

फलदार पेड़ों की सिंचाई की थकान से चूर
हाल ही में घुसा मैं उस छोटे
चौपट खुले पौदघर में
कड़क तिरपाल की छाया में जहाँ
दुर्लभ फूलों के अवशेष मौजूद हैं
अब भी टिका है पूरा ताम-झाम
लकड़ियाँ, तिरपाल और टीन की बाड़
पीले मुरझाये डण्ठलों को थामी हुई
रस्सियों की मरोड़ें
अब भी झलकती है विगत की हिफ़ाज़त
तीमारदारी के सबूत।
तिरपाल की छत पर
डोलती है
मामूली सदाबहार पेड़ों की छाया
बारिश पर ज़िन्दा, जिन्हें बाग़वानी की ज़रूरत नहीं
और हमेशा की तरह ख़ूबसूरत नाज़ुक पौधे
अब ज़िन्दा नहीं हैं।

(1954)

GESCHICHTEN VOM HERRN KEUNER

कौयनर महाशय की कहानियाँ



ब्रेष्ट का व्यंग्यचित्र : एच. सैण्डबर्ग

1. Massnahmen gegen die Gewalt

ताक़त के ख़िलाफ़ कार्यवाही

विचारक कौयनर महाशय ज्यों ही एक बड़े हॉल में काफ़ी तादाद में इकट्ठा हुए लोगों के सामने ताक़त के ख़िलाफ़ बोल रहे थे, उन्होंने देखा कि लोग पीछे हट कर रास्ता पकड़ने लगे हैं। उन्होंने चारों ओर नज़र दौड़ाई और पाया कि उनके पीछे ताक़त खड़ी है।

"क्या बोल रहे थे तुम?" – ताक़त ने उनसे पूछा।

"मैं ताक़त के पक्ष में बोल रहा था" – कौयनर महाशय ने जवाब दिया।

कौयनर महाशय जब वापस जा रहे थे, तब उनके चेलों ने उनकी रीढ़ की हड्डी के बाबत पूछा। कौयनर महाशय ने जवाब दिया – "मेरे पास तुड़वाने के लिए रीढ़ की हड्डी नहीं है। ख़ासकर जब कि मुझे भी ताक़त से ज़्यादा अर्से तक ज़िन्दा रहना है।" और फिर कौयनर महाशय ने यह कहानी सुनायी –

ऐगे महाशय के घर में, जिन्होंने सिर्फ़ एक शब्द 'नहीं' बोलना ही सीखा था, अन्धेरगर्दी के ज़माने में एक नुमायन्दा आया। उसने एक फ़रमान दिखाया जिस पर उन तमाम लोगों के दस्तख़त थे, जो कि शहर के हाकिम थे। फ़रमान में लिखा था कि इस आदमी के पैर जिस किसी घर में दाख़िल होंगे, वह इसके क़ब्ज़े में होगा और वहाँ का हर क़िस्म का भोजन भी। अपनी इच्छा मुताबिक़ वह हर उस आदमी को अपनी सेवा के लिए चुन सकता है, जिस पर उसकी नज़र पड़े।

नुमायन्दा एक कुर्सी पर बैठा, भोजन छका, कुल्ला किया, नीचे पसरा और चेहरा दीवार पर सटा कर नींद की मौज में आने से पहले सवाल किया – 'क्या तुम मेरी ख़ातिरदारी करोगे?'

ऐगे महाशय ने उसे एक लिहाफ़ ओढ़ाया, मक्खियाँ उड़ायीं, उसकी नींद की चौकसी की और उस दिन की तरह लगातार यह क्रम सात साल तक दोहराया। लेकिन इस दौरान उन्होंने जो कुछ भी उसके लिए किया, यह एहतियात

बरता कि एक भी शब्द मुँह से न निकले। जब सात साल गुज़र चुके और नुमायन्दा बेहद खाते-पीते-सोते और हुक्म देते-देते मुटा गया तो एक दिन वह मर गया। ऐगे महाशय ने तब उसकी लाश चीथड़ों में लपेटी और घसीट कर घर से बाहर फेंक दी। वह खाट जिस पर वह सोता था, साफ़ की, दीवारों पर सफ़ेदी पोती और एक गहरी सांस छोड़ते हुए जवाब दिया - 'नहीं'।

2. Herrn Keuners Lieblingstier

'क' महाशय का मनपसन्द जानवर

महाशय 'क' से जब पूछा गया कि उनका मनपसन्द जानवर कौन है, तो उन्होंने हाथी का नाम लिया और उसकी उपयोगिता सिद्ध करते हुए कहा - हाथी में ताक़त और चतुराई शामिल है। ऐसी दयनीय किस्म की चतुराई नहीं जो किसी अत्याचार से बचने या भोजन छीनने के लिए ही काफ़ी हो, बल्कि ऐसी चतुराई जिसके ज़रिये वह बड़ा से बड़ा काम करने में समर्थ है। जहाँ कहीं यह जानवर पाया जाता है, वहाँ अपने पैरों की भारी छाप छोड़ जाता है। इसके अलावा यह भले स्वभाव का और विनोदी भी है। जितना अच्छा दोस्त है, उतना ही अच्छा दुश्मन भी। भारी भरकम शरीर का होते हुए भी ख़ासा तेज़ है। उसकी सूण्ड इतने भारी शरीर को छोटी-से-छोटी चीज़ खाने के लिए पहुँचा देती है - बादाम तक भी। उसके कानों की यह ख़ूबी है कि केवल वही सुनते हैं, जो उसे भाता है। लम्बी उम्र जीता है। मिलनसार है और महज़ हाथियों तक ही नहीं। सभी उसे प्यार करते हैं, लेकिन उतना ही डरते भी हैं। अचरज की बात यह है कि उसकी पूजा भी होती है। इतनी मोटी चमड़ी का है कि उसमें चाकू भी टूट जाये, लेकिन उसकी भावनाएँ बहुत कोमल हैं। वह उदास हो सकता है और गुस्सा भी। मस्ती से नाचता है और मरना बीहड़ों में पसन्द करता है। बच्चों तथा दूसरे छोटे जानवरों को वह ख़ूब प्यार करता है। दिखने में भूरा है, लेकिन अपने मांसल शरीर से दूसरों का ध्यान बरबस खींच लेता है। खाये जाने के काबिल यह नहीं है। काम अच्छा कर सकता है।

मस्ती से पीता है और मस्त रहता है। कला के लिए भी थोड़ा बहुत करता है - हाथी दाँत यही देता है।

3. Der Zweckdiener

मतलबपरस्त

'क' महाशय ने नीचे लिखे सवालों को पेश किया -

रोज सुबह मेरा पड़ोसी ग्रामोफ़ोन पर संगीत सुनता है। उसे संगीत की ज़रूरत क्यों पड़ी? इसलिए कि वह क़सरत करता है, ऐसा मैंने सुना। वह क़सरत क्यों करता है? मैंने सुना है कि उसे ताक़त की ज़रूरत है। ताक़त की ज़रूरत उसे क्यों पड़ी? इसलिए कि शहर में उसे अपने दुश्मनों का सफ़ाया करना है। अपने दुश्मनों को वह क्यों ख़त्म करना चाहता है? क्योंकि वह भोजन चाहता है, मैंने सुना।

इतना सुनने के बाद कि उनका पड़ोसी क़सरत के लिए संगीत सुनता है, ताक़तवर होने के लिए क़सरत करता है, ताक़तवर अपने दुश्मनों को ख़त्म करने के लिए बनना चाहता है और दुश्मनों को इसलिए ख़त्म करता है कि वह खा सके। 'क' महाशय ने फिर सवाल उठाया - 'क्यों खाता है वह?'

4. Das Gespräche

बातचीत

'अब हम आपस में क़तई बातचीत नहीं कर सकते,' महाशय 'क' ने एक आदमी से कहा।

'क्यों'? उसने चौंकते हुए पूछा।

'मैं अपनी तर्कसंगत बात अब तुम्हारे आगे नहीं रख सकता।' महाशय 'क' ने लाचारी ज़ाहिर की।

'लेकिन इस बात से मुझ पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।' दूसरे ने तसल्ली ज़ाहिर की।

'मुझे पता है,' महाशय 'क' ने खीझते हुए कहा - 'लेकिन मुझ पर इसका असर पड़ता है।'

5. Das Wiedersehen

मुलाक़ात

एक आदमी जिसने 'क' महाशय को काफ़ी लम्बे अरसे से नहीं देखा था, मिलने पर उनसे कहा – 'आप तो बिल्कुल भी नहीं बदले।'

'अच्छा'। महाशय 'क' ने कहा और पीले पड़ गये।

6. Die Erwartung

इन्तज़ार

'क' महाशय ने किसी चीज़ का इन्तज़ार एक दिन तक किया, फिर एक सप्ताह और फिर पूरे महीने भर। अन्त में उन्होंने कहा – 'एक महीने का इन्तज़ार मैं बख़ूबी कर सकता था, लेकिन इन दिनों और हफ़्तों का नहीं।'

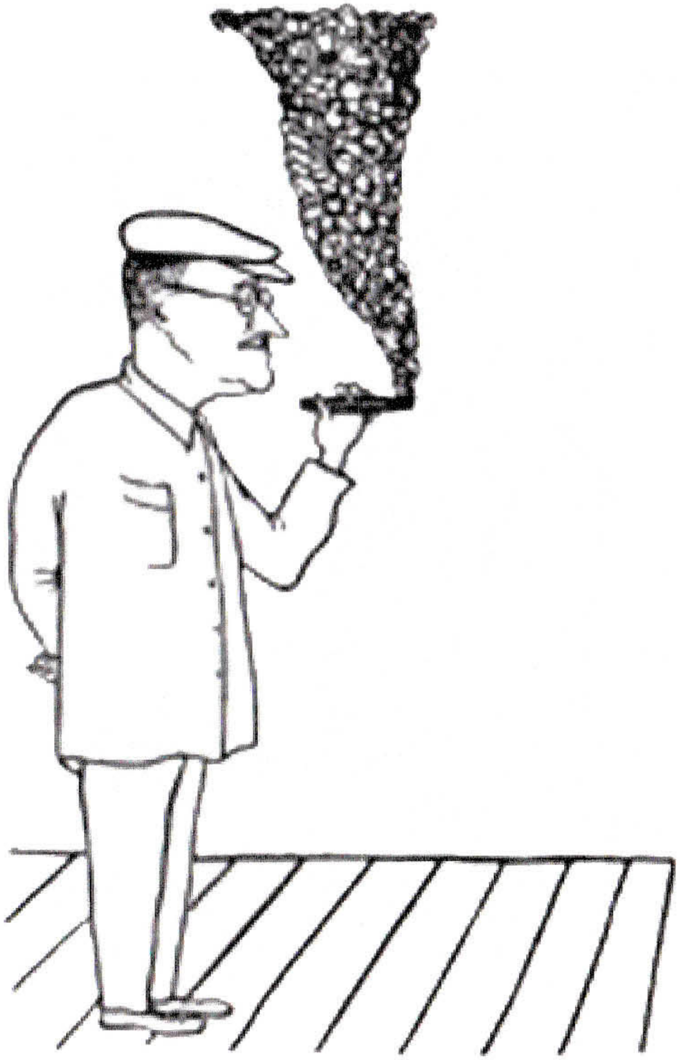
7. Der Erfolg

क़ामयाबी

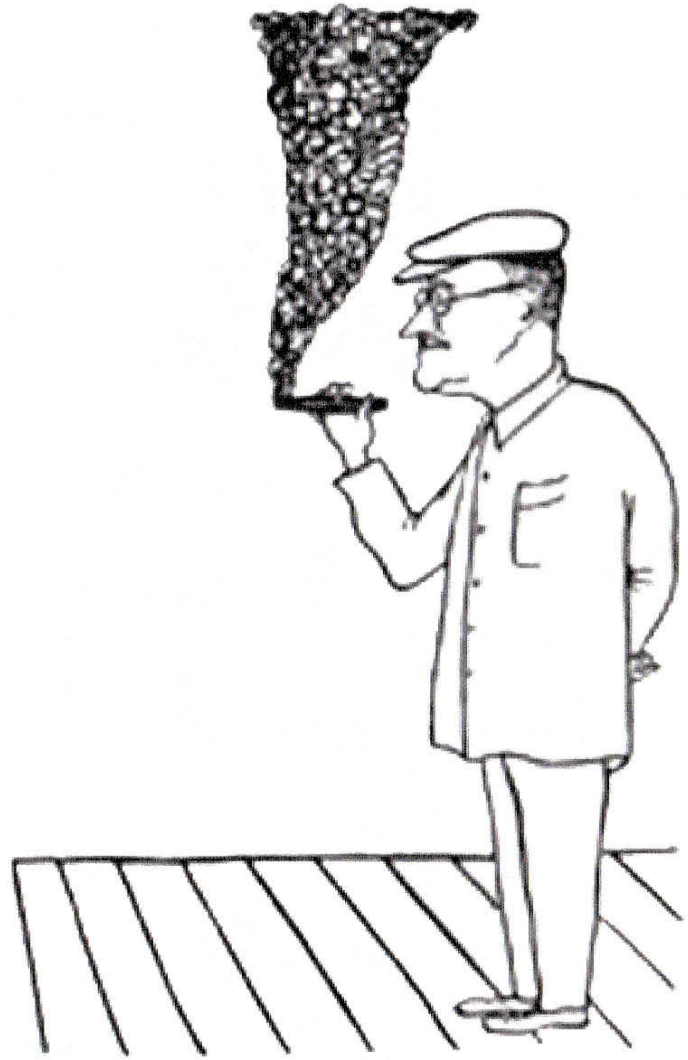
महाशय 'क' ने रास्ते से गुज़रती हुई एक अभिनेत्री को देखकर कहा – 'काफ़ी ख़ूबसूरत है यह।' उनके साथी ने कहा – 'इसे हाल ही में कामयाबी मिली है, क्योंकि वह ख़ूबसूरत है।' 'क' महाशय खीझे और बोले – 'वह ख़ूबसूरत है क्योंकि उसे क़ामयाबी हासिल हो चुकी है।'

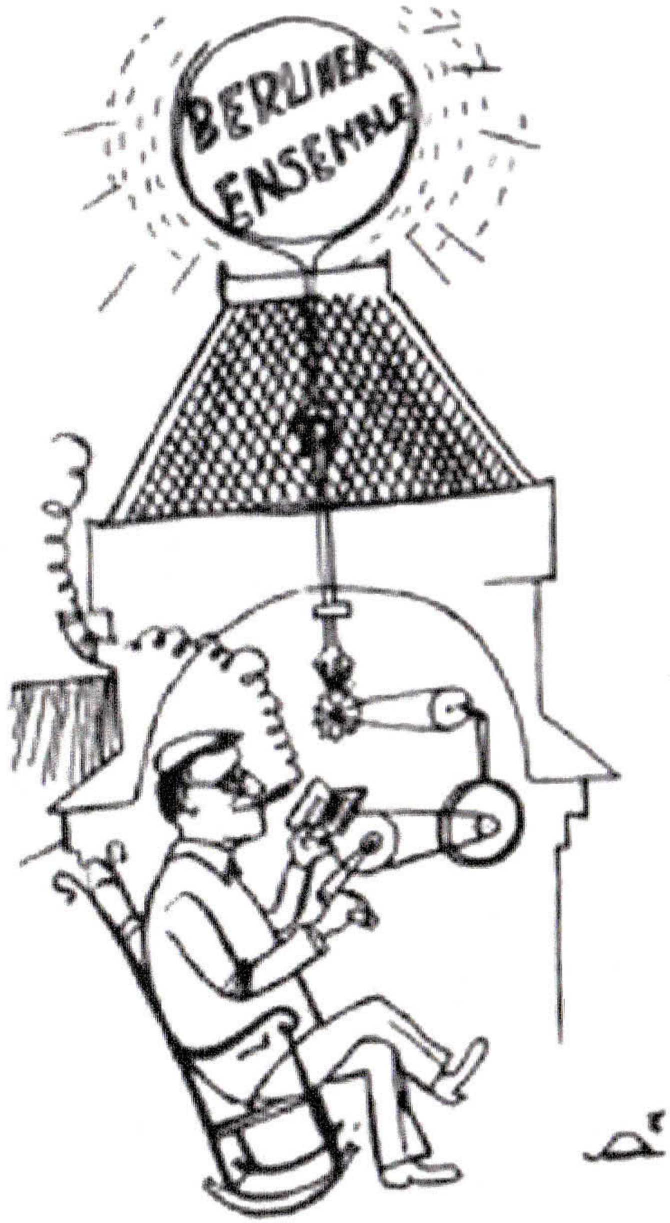


कैरिकेचर, डाल्चिन



कैरिकेचर, ई. शॉ





बर्लिनर इनसेम्बले, कैरिकेचर

8. Wenn Herr K. einen Menschen Liebte

महाशय 'क' जब किसी व्यक्ति को प्यार करते

महाशय 'क' से पूछा गया, 'जब आप किसी आदमी को प्यार करते हैं, तब क्या करते हैं?'

महाशय 'क' ने जवाब दिया : 'मैं उस आदमी का एक खाका बनाता हूँ और फिर इस फ़िक्र में रहता हूँ कि वह हू-ब-हू उसी के जैसा बने।'

'कौन? वह खाका?'

'नहीं,' महाशय 'क' ने जवाब दिया : 'वह आदमी।'

9. Organisation

संगठन

महाशय 'क' ने एक बार कहा :

'चिन्तक को अब न तो किसी रोशनी की ज़रूरत है, न रोटी की और न ही किन्हीं विचारों की।'

10. Herr K. in Fremden Behausung

महाशय 'क' एक अजनबी मकान में

एक अजनबी मकान में प्रवेश करने पर इससे पहले कि महाशय 'क' वहाँ आराम फ़रमाते, उन्होंने देखा कि उस मकान में सिर्फ़ रास्ते ही रास्ते हैं, बाक़ी कुछ नहीं। इस बारे में एक सवाल पूछे जाने पर उसका जवाब उन्होंने इस तरह दिया : 'एक पुरानी आदत से आप जल्दी पिण्ड नहीं छुड़ा पाते हैं, वैसे मैं इस पक्ष में हूँ और यह बेहतर भी है कि मेरे मकान में एक से अधिक रास्ते हैं।'

GESCHICHTEN VOM HERRN B.

महाशय 'ब' की कहानियाँ



कैरिकेचर, एच. क्रेत्शमार

1. Dialektik

डायलेक्टिक

महाशय 'ब' जब लड़के थे, तब फ्रेंच की एक लिखित परीक्षा के सिलसिले में उन्हें तर्तिया जाना पड़ा। वहाँ पहुँचते ही परीक्षा शुरू हो गयी। उनका एक सहपाठी यही परीक्षा लातिन में दे रहा था। उस सहपाठी ने अपनी कुछ ग़लतियाँ रगड़ कर साफ़ कीं और प्रोफ़ेसर के पास जाकर नम्बर बढ़ाने की माँग की। लेकिन उसके अंक और भी कम कर दिये गये, क्योंकि जहाँ-जहाँ ग़लतियाँ रगड़ी गयी थीं, घिसट्टा पड़ने से वहाँ-वहाँ काग़ज़ छिछला पड़ गया था। इस तरह की कारगुज़ारी के नुक़सान से महाशय 'ब' ख़ूब परिचित थे। उन्होंने लाल स्याही ली; अपनी कापी पर कई सही जगहों पर भी ग़लतियों के निशान बनाये, और फिर प्रोफ़ेसर के पास जाकर बोले :

'यहाँ क्या ग़लती है?' प्रोफ़ेसर हैरान हो गये। लाल घेरों वाली जगहें सही थीं।

'प्रोफ़ेसर यदि ग़लतियों को गिनने में ऐसी चूक करते हैं, तब निश्चित रूप से मेरे नम्बर बढ़ने चाहिए' - महाशय 'ब' ने अपनी बात आगे रखी। इस तर्क के आगे प्रोफ़ेसर झुक गये और महाशय 'ब' के नम्बरों में बढ़ोत्तरी कर दी गयी।

2. Gewöhnung

आदत

मैक्स राइनहार्ट शहर के नामी रंगमंच निर्देशक थे। महाशय 'ब' इनके थियेटर में बतौर नाटककार नियुक्त हुए, लेकिन सचमुच आपस में इन दोनों ने कभी एक शब्द तक नहीं बोला। रिहर्सल के दौरान महाशय 'ब' दुआ-सलामी किये बग़ैर निर्देशक के पीछे ख़ामोश बैठ गये, महज़ इस ख़याल से कि उनके

काम में बाधा न पड़े। मैक्स राइनहार्ट ने भी यदाकदा अजनबी की तरह उनकी टोह ले ली, लेकिन मुँह से कुछ नहीं बोला। दूसरे दिन भी महाशय 'ब' चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गये और आगे की रिहर्सलों में भी चुपचाप बैठने का क्रम जारी रखा।

एक दिन महाशय 'ब' नहीं आये। निर्देशक की खोजी निगाहों ने थियेटर हॉल टटोला और फिर छूटते ही उन्होंने अपने सहायक से पूछा : 'आज कहाँ है वह?'

3. Erziehung

तालीम

महाशय 'ब' के एक साथी एक अभिनेत्री से शादी करना चाहते थे, सो उन्होंने इस सिलसिले में उनकी राय जाननी चाही। महाशय 'ब' ने कुढ़ते हुए जवाब दिया : 'जब तुम पानी में छलाँग मारने को तैयार बैठे हो, तब फिर मुझसे यह पूछने का क्या तुक कि तुम्हें तैरना आता है या नहीं?'

4. Gefahren beim sagen der Wahrheit

सच बोलने का ख़तरा

अमरीकी फ़िल्म नगरी हॉलीवुड में एकबार संगीतकार हंस आइसलर महाशय 'ब' से मिले और उनके सामने यह रहस्योद्‌घाटन किया कि एक प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक ने काफ़ी तैश में आकर उनसे (आइसलर) यह बात ज़ाहिर की है कि अब वह कभी भविष्य में महाशय 'ब' के साथ काम नहीं करना चाहता।

महाशय 'ब' ने चकित होकर कहा, 'मैं समझा नहीं, वह मेरा साथी था और मैंने महज़ सच्चाई-भर उससे व्यक्त की थी।'

संगीतकार हंस आइसलर ने सिर हिलाते हुए कहा - 'मगर कितनी ज़ोर से?'

5. Selbstkenner

आत्मज्ञानी

युवा आलोचक एर्न्स्ट शाउमाखर ने महाशय 'ब' की प्रारम्भिक नाट्य-रचनाओं पर छह सौ पृष्ठों का एक शोध-प्रबन्ध लिखा। इस पुस्तक से कुछ उद्धरण पेश करते हुए एक दूसरे आलोचक वीलान्द हेर्त्सफेल्डे ने महाशय 'ब' के सामने उस साथी की आलोचना की। लेकिन महाशय 'ब' से यह सुनकर कि उन्होंने वह शोध-प्रबन्ध पढ़ा ही नहीं है, वह ठगा-सा रह गया और जिज्ञासावश उनसे इसका कारण पूछ बैठा। महाशय 'ब' ने प्रकृतिस्थ होकर जवाब दिया : 'उसने वह किताब मेरे लिए हरगिज़ नहीं लिखी है।'

6. Telegrammwechsel

जवाबी तार

महाशय 'ब' ने अपटान एस. द्वारा लिखित उपन्यास 'शि. शहर का मैदाने-जंग' और इसके ठीक बाद जर्मन लेखक फ्रीदरिख शिलर की रचना 'ओ. शहर की जवान महिला की त्रासदी' पढ़ी। ये दोनों रचनाएँ उन्हें इतनी अधिक पसन्द आयीं कि इनके आधार पर उन्होंने एक नया नाटक रच डाला। लिखने के बाद उन्होंने गुस्ताफ़ जी. से यह आग्रह किया कि वह इस नाटक का मंचन करें। गुस्ताफ़ जी. ने एक तार द्वारा जवाब भेजा : 'भगवान के लिए माफ़ करना!'

द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद गुस्ताफ़ जी. ने महाशय 'ब' के उसी नाटक के मंचन के साथ, जिसे कभी वह अस्वीकार कर चुके थे, पुनः एक थियेटर कम्पनी की शुरुआत करनी चाही। इस बार महाशय 'ब' ने तार द्वारा उन्हें जवाब भेजा : 'भगवान के लिए माफ़ करना!'

7. Erste Hilfe

पहली मदद

महाशय 'ब' से अपनी भूमिकाओं के सिलसिले में कई अभिनेता मिला करते थे। एक युवा अभिनेत्री ने अपने लिए गोयथे के नाटक 'फ़ाउस्ट' से जेल दृश्य की एक भूमिका पसन्द की। अभिनय के दौरान पूरा दमखम लगाकर उसने इतना पसीना और आँसू बहाये कि वह बेहोश होकर गिर पड़ी। यह देखते ही महाशय 'ब' ने उसे सँभाला-सहलाया और उसकी कुशल चाहते हुए कहा : 'इसे एक गिलास पानी का दो!'

8. Ausbeutung

शोषण

राजधानी की दिक़्क़तों से तंग आकर महाशय 'ब' अस्पताल चले आये। यहाँ उन्हें सुकून मिला। वे डॉक्टरों, नर्सों और मरीजों के साथ बहस करते, आगन्तुकों से मिलते, आम लोगों में दिलचस्पी लेते, नाटकों की रूपरेखा बनाते, दृश्य लिखते, किताबें जुटाते, प्रकाशकों के साथ विचार-विमर्श करते, अभिनेताओं से गुफ़्तगू करते और दोस्तों से सलाह-मशविरा लेते – यानी देखते ही देखते उन्होंने अस्पताल के बड़े हॉल को एक अच्छे-ख़ासे वर्कशॉप में बदल डाला।

उनके मित्र अर्नोल्ट ब्रोनेन काफ़ी चिन्तित होकर यह ख़ैर मना रहे थे कि महाशय 'ब' जल्द-से-जल्द अस्पताल से छुट्टी लेकर घर लौटें और स्वास्थ्य लाभ करें।

'ऐसी अध्ययनशाला और कहीं नहीं है।' महाशय 'ब' ने उत्कण्ठित होकर कहा – 'जैसा कि एक अस्पताल का हॉल। बेशक तुम्हें भी यहाँ आना चाहिए। दुआ करो कि जल्दी ही कोई रोग तुम पर भी आ लगे।'

9. Gesteigerte Achtung

डबल आदर

साहित्यकार गुन्थर वाइजनबोर्ग को एक साहित्य पुरस्कार मिला। यह ख़बर सुनते ही महाशय 'ब' ने उन्हें फ़ोन किया और कहा : 'बधाई देता हूँ। कितनी रक़म का पुरस्कार था भई यह?'

गुन्थर वाइजनबोर्ग ने रक़म गिनाई – 'दस हज़ार मार्क।'

'तो फिर हार्दिक बधाई लें।' महाशय 'ब' बोले।

10. Fixierung

तालमेल

एक ख़ास दृश्य के लिए कौन-सा रंग-विधान उपयुक्त रहेगा, महाशय 'ब' के एक साथी ने इस बारे में उनकी राय पूछी।

महाशय 'ब' खुले दिल से बोले : 'कोई-सा चुन लो, मुझे सभी रंग रास आते हैं। बस असल चीज़ यह है कि वह भूरा हो।'

11. Bekenntnisse

अपराध-स्वीकार

महाशय 'ब' के थियेटर में दुनिया-भर से मिलने-जुलने वालों का ताँता लगा रहता था। कनाडा के एक प्रोफ़ेसर ने भी – जो वहाँ जर्मन साहित्य पढ़ाते थे – एक रिहर्सल देखी। महाशय 'ब' द्वारा उनका स्वागत किये जाने पर उन्होंने हड़बड़ाहट में अपनी निष्ठा यूँ प्रकट की – 'मैं महाशय 'ब' का भक्त हूँ।'

'अच्छा,' महाशय 'ब' बोले, 'लेकिन मैं नहीं हूँ।'

12. Menschenkenntnis

इन्सानी समझ

महाशय 'ब' के साथ लम्बे अर्से तक काम करने वाले रूथ बेरलाऊ ने उन पर एक किताब लिखनी चाही। महाशय 'ब' को जब यह पता चला तो उन्होंने फ़ौरन रूथ बेरलाऊ को टेलीफ़ोन खड़खड़ाया और कहा - 'यह भी लिखना कि मैं महान क्यों हूँ।'

13. Grenzen des Talents

प्रतिभा की सीमा

महाशय 'ब' जासूसी उपन्यास लिखना टेढ़ी खीर समझते थे। वह ऐसे लेखकों पर आश्चर्य करते थे, जो चार या छः सप्ताह के अन्दर ऐसे उपन्यास लिख मारते।

'निर्वासन के दिनों में एक जासूसी उपन्यास मैंने भी लिखा था,' महाशय 'ब' बोले - 'लेकिन वह इतना लचर था कि किसी ने उसे छापना पसन्द नहीं किया।'

14. Padagogik

शिक्षा-विज्ञान

राजधानी के पश्चिमी भाग में अक्सर मुक्त समाज के बारे में चर्चाएँ होती रहती थीं। एक बार मानवतावाद पर फिर बहस छिड़ी और वे सभी लोग, जिनके साथ महाशय 'ब' वहाँ गये हुए थे, बुरी तरह से बहस में उलझ गये। एक पत्रकार, जो पश्चिम की एक समाचार पत्रिका के प्रतिनिधि थे, इस बहस से काफ़ी चिढ़ बैठे। नकियाते स्वरों में उन्होंने पूछा, 'कृपया क्या आप मुझे यह बताने

का कष्ट करेंगे कि मानवतावाद का अर्थ आख़िर आप लोग क्या समझ रहे हैं?'

इस पर बहस ज़ोर पकड़ कर दार्शनिक रंग ले बैठी। झड़प-पर-झड़प बढ़ती गयी। कोई भी सन्तुष्ट नज़र नहीं आ रहा था।

आख़िरकार महाशय 'ब' ने, जिन्हें लोग अब तक भूल चुके थे, होंठों से सिगरेट निकाल कर पत्रकार की ओर घूर कर पूछा, 'क्या आप बाल-बच्चेदार हैं?'

'जी हाँ।' पत्रकार का जवाब था। वह दो बच्चों का बाप था।

'क्या आप अपने बच्चों को पीटते हैं'। महाशय 'ब' ने उसे फिर तलब किया। पत्रकार थोड़ा अकबकाया : 'जी हाँ, यदा-कदा, जब बहुत ज़रूरी हो जाये।' 'देखा आपने।' महाशय 'ब' बोले : 'हम अपने बच्चों को कभी नहीं मारते।'

15. Verfremdungseffekte

विरक्ति-प्रभाव

महाशय 'ब' के एक सयाने मित्र ने उनसे पूछा कि अपने इर्द-गिर्द उन्होंने ढेर सारे बेवक़ूफ़ क्यों इकट्ठा किये हुए हैं। महाशय 'ब' ने उपेक्षित भाव से जवाब दिया : 'सर्वथा अनुपयोगी कुछ भी नहीं होता। सिर्फ़ यह देखना ज़रूरी है कि उस चीज़ का उपयोग कैसे किया जाये।'

कुछ रुककर महाशय 'ब' आगे बोले, 'मेरे एक परिचित थे - दार्शनिक कार्ल क्राउस (1874-1936)। वे अपने अध्ययन कक्ष में पानी का नल खुला छोड़ देते थे।

'पानी की कलकल में गली का बेतहाशा शोर दब जाता था। मेरे लिए इसी तरह की कलकल ये बेवक़ूफ़ हैं।'

16. Philosophenlohn

दार्शनिक का इनाम

युवा दार्शनिक वॉल्फगांग हैरिख दर्शनशास्त्र के ऊपर एक नयी किताब लेकर महाशय 'ब' के पास आये और उनसे आग्रह किया कि वे तत्काल उसे पढ़ लें। किताब इतनी मोटी थी कि महाशय 'ब' को उससे नफ़रत हो आयी। अतः एक मित्र ने युवा दार्शनिक को सलाह दी कि उस किताब में जो कुछ भी महत्वपूर्ण हो, उसका सारांश दो पृष्ठों में लिख डाले।

'यह बहुत अच्छा रहेगा', महाशय 'ब' ने कहा, 'इसके लिए मैं तुम्हें एक जासूसी उपन्यास प्रेरक के बतौर दिये देता हूँ।'

17. Thema Zwei

थीम द्विअर्थी

कला कैसी होनी चाहिए – इस चिरपरिचित थीम से महाशय 'ब' भी जूझा करते। साहित्यकार पीटर हैक्स के साथ एक बातचीत के दौरान उन्होंने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि कला का काम जानकारी देना होना चाहिए। लेकिन पीटर हैक्स ने इस मत पर सन्देह व्यक्त किया।

'एक ख़ास अख़बार में एक कॉलम निकलता है, जिसका शीर्षक रहता है – जिसे अधिकांश लोग नहीं जानते – वस्तुतः वही कला की असली थीम है।'

क्षण-भर बाद इसमें इज़ाफ़ा करते हुए उन्होंने कहा, 'लेकिन शायद यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा – जिसे अधिकांश लोग जानना ही नहीं चाहते।'

18. Kleiner Zweifel

किंचित सन्देह

मध्य शताब्दी के दौरान पश्चिम में एक नयी नाट्य-विधा पनपी, जिसके लेखक मानवीय कृत्यों को बकवास के रूप में प्रस्तुत करते थे, इस विधा के एक धाकड़ नुमायन्दा रूमानियावासी यूजीन इयोनेस्को थे। एक दिन महाशय 'ब' की मुलाक़ात इनसे हुई।

'दुनिया अब समझ से परे हो गयी है' – यूजीन इयोनेस्को बोले।

'यह आपको कहाँ से मालूम हुआ?' महाशय 'ब' का सवाल था।

19. Naturgefühl

सौन्दर्यानुभूति

शहर के मुख्य गेट के सामने एक सुन्दर झील के किनारे महाशय 'ब' की काटेज थी। अपने साथियों के साथ वह यहीं काम करते और आगन्तुकों का स्वागत भी। इस जगह का प्राकृतिक दृश्य सचमुच मनोहारी था, अतः एक आगन्तुक उनके सामने चहल-क़दमी का प्रस्ताव रख बैठा।

महाशय 'ब' ने उसे धुत्कारते हुए कहा – 'श्रीमान जी! मैं घुमक्कड़ क़तई नहीं हूँ।'

20. Fach wissen

विषय ज्ञान

महाशय 'ब' स्टेज कारीगरों, मिस्त्रियों और ड्राइवरों के साथ हँस-बोलकर बातचीत करते थे। इन लोगों के साथ बातचीत के दौरान उन्हें अक्सर ऐसे सवालों का जवाब देना पड़ता था, जिनसे कि अन्यथा उनका सामना नहीं हो सकता था। एक कारीगर का सवाल था – 'मौत कैसे आती होगी?'

'आप जानते हैं,' महाशय 'ब' बोले, 'जीवन के साथ कुछ ऐसा है – हृदय के कपाट खुलते हैं और बन्द होते हैं, फिर खुलते हैं और बन्द होते हैं और एक दिन हठात फिर ये कपाट नहीं खुलते।'

• • •

मोहन थपलियाल

पौड़ी गढ़वाल ज़िले के मूल निवासी (गाँव श्रीकोट खातस्यूँ) मोहन थपलियाल का जन्म सन 1942 में दयारा बाग (टिहरी) में हुआ।

दसवीं तक पढ़ने के बाद स्कूल छोड़ दिया, फिर इण्टर तक पढ़ाई और नौकरी एक साथ। चार-पाँच नौकरियाँ करने के बाद 1973 में सरकारी नौकरी से इस्तीफ़ा देकर 1974 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली में दाख़िला लेकर जर्मन भाषा एवं साहित्य में बी.ए. ऑनर्स। अगस्त 1979 से लखनऊ के लिटरेसी हाउस में अतिथि लेखक के रूप में कुछ माह तक काम करने के बाद नवम्बर 1979 से दैनिक 'अमृत प्रभात' लखनऊ के सम्पादकीय विभाग में काम करना शुरू किया। जून 1990 में 'अमृत प्रभात' बिक जाने के बाद फिर स्वतन्त्र लेखन और छिटपुट नौकरियों का दौर शुरू।

1983 में राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली से पहला कहानी संग्रह 'सालोमन ग्रुण्डे और अन्य कहानियाँ' प्रकाशित। 1995 में वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से अल्बर्ट आइंस्टाइन की जीवनी प्रकाशित। कहानियों का दूसरा संग्रह 'छज्जूराम दिनमणि' प्रकाशित।

21 फ़रवरी 2003 को उनका निधन हो गया।